قرآن مجید

लफ़्ज़ी तरजुमा

eParah

قَد اَفلَحَ

पारा - 18

الجزء 18

آيَاتُهَا: 118 | 23 سُوْرَةُ الْمُؤْمِنُوْنَ مَكِّيَّةٌ 74 | رُكُوْعَاتُهَا: 6

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قَدْ	اَفْلَحَ	الْمُؤْمِنُوْنَ ①	الَّذِيْنَ	هُمْ	فِيْ صَلَاتِهِمْ	خٰشِعُوْنَ ②
यक़ीनन	फ़लाह पा गए	ईमान लाने वाले	वो लोग जो	वो	अपनी नमाज़ में	ख़ुशूअ करने वाले हैं

وَالَّذِيْنَ	هُمْ	عَنِ اللَّغْوِ	مُعْرِضُوْنَ ③	وَالَّذِيْنَ	هُمْ	لِلزَّكٰوةِ
और वो जो	वो	लग़्व बात से	ऐराज़ करने वाले हैं	और वो जो	वो	ज़कात को

فٰعِلُوْنَ ④	وَالَّذِيْنَ	هُمْ	لِفُرُوْجِهِمْ	حٰفِظُوْنَ ⑤	اِلَّا	عَلٰٓى
(अदा) करने वाले हैं	और वो जो	वो	अपनी शर्मगाहों की	हिफ़ाज़त करने वाले हैं	मगर	ऊपर

اَزْوَاجِهِمْ	اَوْ	مَا	مَلَكَتْ	اَيْمَانُهُمْ	فَاِنَّهُمْ	غَيْرُ	مَلُوْمِيْنَ ⑥
अपनी बीवियों के	या	जिनके	मालिक हुए	उनके दाएँ हाथ	तो बेशक वो	नहीं	मलामत किए गए

فَمَنِ	ابْتَغٰى	وَرَآءَ	ذٰلِكَ	فَاُولٰٓئِكَ	هُمُ	الْعٰدُوْنَ ⑦	وَالَّذِيْنَ	هُمْ
तो जो कोई	चाहे	अलावा	इसके	तो यही लोग हैं	वो	जो हद से गुज़रने वाले हैं	और वो जो	वो

لِاَمٰنٰتِهِمْ	وَعَهْدِهِمْ	رٰعُوْنَ ⑧	وَالَّذِيْنَ	هُمْ	عَلٰى صَلَوٰتِهِمْ
अपनी अमानतों की	और अपने अहद की	निगरानी करने वाले है	और वो जो	वो	अपनी नमाज़ों पर

وقف لازم

يُحَافِظُوْنَ ⑨	اُولٰٓئِكَ	هُمُ	الْوٰرِثُوْنَ ⑩	الَّذِيْنَ	يَرِثُوْنَ	الْفِرْدَوْسَ
वो हिफ़ाज़त करते हैं	यही लोग हैं	वो	जो वारिस हैं	वो जो	वारिस होंगे	फ़िरदौस के

هُمْ	فِيْهَا	خٰلِدُوْنَ ⑪	وَلَقَدْ	خَلَقْنَا	الْاِنْسَانَ	مِنْ سُلٰلَةٍ
वो	उसमें	हमेशा रहने वाले हैं	और अलबत्ता तहक़ीक़	पैदा किया हमने	इंसान को	सत/निचोड़ से

مِّنْ طِيْنٍ ⑫	ثُمَّ	جَعَلْنٰهُ	نُطْفَةً	فِيْ قَرَارٍ مَّكِيْنٍ ⑬	ثُمَّ	خَلَقْنَا
मिट्टी के	फिर	बनाया हमने उसे	नुत्फ़ा	एक महफ़ूज़ ठिकाने में	फिर	बनाया हमने

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

النُّطْفَةَ	عَلَقَةً	فَخَلَقْنَا	الْعَلَقَةَ	مُضْغَةً	فَخَلَقْنَا	الْمُضْغَةَ
नुत्फ़े को	अलक़/जमा हुआ ख़ून	फिर बनाया हमने	जमे हुए ख़ून को	मुदग़ा/गोश्त की बोटी	फिर बनाया हमने	बोटी को

عِظٰمًا	فَكَسَوْنَا	الْعِظٰمَ	لَحْمًا ق	ثُمَّ	اَنْشَاْنٰهُ	خَلْقًا	اٰخَرَ ط
हड्डियां	फिर पहनाया हमने	हड्डियों को	गोश्त	फिर	उठाया हमने उसे	मख़्लूक़	दूसरी

فَتَبٰرَكَ	اللّٰهُ	اَحْسَنُ	الْخٰلِقِيْنَ ط (14)	ثُمَّ	اِنَّكُمْ	بَعْدَ ذٰلِكَ
तो बहुत बाबरकत है	अल्लाह	जो सब से अच्छा है	पैदा करने वालों में	फिर	बेशक तुम	बाद इसके

لَمَيِّتُوْنَ ط (15)	ثُمَّ	اِنَّكُمْ	يَوْمَ	الْقِيٰمَةِ	تُبْعَثُوْنَ (16)	وَلَقَدْ	خَلَقْنَا
ज़रूर मरने वाले हो	फिर	बेशक तुम	दिन	क़यामत के	तुम उठाए जाओगे	और अलबत्ता तहक़ीक़	बनाए हमने

فَوْقَكُمْ	سَبْعَ	طَرَآئِقَ ق	وَمَا	كُنَّا	عَنِ الْخَلْقِ	غٰفِلِيْنَ (17)	وَاَنْزَلْنَا
तुम्हारे ऊपर	सात	रास्ते	और नहीं	हैं हम	मख़्लूक़ से	ग़ाफ़िल	और उतारा हमने

مِنَ السَّمَآءِ	مَآءًۢ	بِقَدَرٍ	فَاَسْكَنّٰهُ	فِي الْاَرْضِ ق	وَاِنَّا
आसमान से	पानी	साथ एक अंदाज़े के	फिर ठहराया हमने उसे	ज़मीन में	और बेशक हम

عَلٰى ذَهَابٍۢ	بِهٖ	لَقٰدِرُوْنَ ج (18)	فَاَنْشَاْنَا	لَكُمْ	بِهٖ	جَنّٰتٍ
ले जाने पर	उसे	अलबत्ता क़ादिर हैं	फिर पैदा किया हमने	तुम्हारे लिए	साथ इसके	बाग़ात को

مِّنْ نَّخِيْلٍ	وَّاَعْنَابٍ م	لَكُمْ	فِيْهَا	فَوَاكِهُ	كَثِيْرَةٌ	وَّمِنْهَا
खजूरों के	और अंगूरों के	तुम्हारे लिए	इनमें	फल हैं	बहुत से	और इनमें से

وقف لازم

تَاْكُلُوْنَ لا (19)	وَشَجَرَةً	تَخْرُجُ	مِنْ طُوْرِ سَيْنَآءَ	تَنْۢبُتُ	بِالدُّهْنِ
तुम खाते हो	और एक दरख़्त	जो निकलता है	तूरे सीना से	वो उगता है	साथ चिकनाई के

وَصِبْغٍ	لِّلْاٰكِلِيْنَ (20)	وَاِنَّ	لَكُمْ	فِي الْاَنْعَامِ	لَعِبْرَةً ط	نُسْقِيْكُمْ
और सालन	खाने वालों के लिए	और बेशक	तुम्हारे लिए	मवेशियों में	अलबत्ता इबरत/सबक़ है	हम पिलाते हैं तुम्हें

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مِّمَّا	فِيْ بُطُوْنِهَا	وَلَكُمْ	فِيْهَا	مَنَافِعُ	كَثِيْرَةٌ	وَّمِنْهَا
उससे जो	उनके पेटों में है	और तुम्हारे लिए	उनमें	फ़ायदे हैं	बहुत से	और इनमें से

تَاْكُلُوْنَ (21) لا	وَعَلَيْهَا	وَعَلَى الْفُلْكِ	تُحْمَلُوْنَ (22) ع	وَلَقَدْ	اَرْسَلْنَا
तुम खाते हो	और उन पर	और कश्तियों पर	तुम सवार किए जाते हो	और अलबत्ता तहक़ीक़	भेजा हमने

ع 1 22 1

نُوْحًا	اِلٰى قَوْمِهٖ	فَقَالَ	يٰقَوْمِ	اعْبُدُوا	اللّٰهَ	مَا	لَكُمْ
नूह को	तरफ़ उसकी क़ौम के	तो उसने कहा	ऐ मेरी क़ौम	इबादत करो	अल्लाह की	नहीं	तुम्हारे लिए

مِّنْ اِلٰهٍ	غَيْرُهٗ ط	اَفَلَا	تَتَّقُوْنَ (23)	فَقَالَ	الْمَلَؤُا	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا
कोई इलाह (बरहक़)	उसके सिवा	क्या फिर नहीं	तुम डरते	तो कहा	सरदारों ने	जिन्होंने	कुफ़्र किया

مِنْ قَوْمِهٖ	مَا	هٰذَآ	اِلَّا	بَشَرٌ	مِّثْلُكُمْ لا	يُرِيْدُ	اَنْ	يَّتَفَضَّلَ
उसकी क़ौम में से	नहीं	ये	मगर	एक इंसान	तुम्हारे जैसा	जो चाहता है	कि	वो फ़ज़ीलत हासिल कर ले

عَلَيْكُمْ ط	وَلَوْ	شَآءَ	اللّٰهُ	لَاَنْزَلَ	مَلٰٓئِكَةً ج صلے	مَّا	سَمِعْنَا	بِهٰذَا
तुम पर	और अगर	चाहता	अल्लाह	अलबत्ता वो उतारता	फ़रिश्ते	नहीं	सुना हमने	इस बात को

فِيْٓ اٰبَآئِنَا	الْاَوَّلِيْنَ (24) ج	اِنْ	هُوَ	اِلَّا	رَجُلٌ م	بِهٖ	جِنَّةٌ	فَتَرَبَّصُوْا
अपने आबा ओ अजदाद में	पहले	नहीं	वो	मगर	एक शख़्स	जिसको	जुनून है	तो इंतिज़ार करो

بِهٖ	حَتّٰى حِيْنٍ (25)	قَالَ	رَبِّ	انْصُرْنِيْ	بِمَا	كَذَّبُوْنِ (26)
साथ उसके	एक वक़्त तक	कहा	ऐ मेरे रब	मदद फ़रमा मेरी	इस वजह से जो	उन्होंने झुठलाया मुझे

فَاَوْحَيْنَآ	اِلَيْهِ	اَنِ	اصْنَعِ	الْفُلْكَ	بِاَعْيُنِنَا	وَوَحْيِنَا
पस वही की हमने	तरफ़ उसके	कि	बना	कश्ती	हमारी निगाहों के सामने	और हमारी वही के मुताबिक़

فَاِذَا	جَآءَ	اَمْرُنَا	وَفَارَ	التَّنُّوْرُ لا	فَاسْلُكْ	فِيْهَا	مِنْ كُلٍّ
फिर जब	आ जाए हुक्म	हमारा	और जोश मारे	तन्नूर	तो दाख़िल कर ले	इसमें	हर क़िस्म के

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

زَوْجَيْنِ	اثْنَيْنِ	وَ اَهْلَكَ	اِلَّا	مَنْ	سَبَقَ	عَلَيْهِ	الْقَوْلُ	مِنْهُمْ ج
जोड़े (नर व मादा)	दोनों	और अपने अहलो अयाल को	मगर	जो	पहले हो चुकी	उस पर	बात	उनमें से

وَلَا	تُخَاطِبْنِيْ	فِي الَّذِيْنَ	ظَلَمُوْا ج	اِنَّهُمْ	مُّغْرَقُوْنَ (27)
और ना	तुम बात करना मुझसे	उनके मामले में जिन्होंने	ज़ुल्म किया	बेशक वो	ग़र्क़ किए जाने वाले हैं

فَاِذَا	اسْتَوَيْتَ	اَنْتَ	وَمَنْ	مَّعَكَ	عَلَى الْفُلْكِ	فَقُلِ	الْحَمْدُ
फिर जब	सवार हो जाओ तुम	तुम	और जो	तुम्हारे साथ हैं	कश्ती पर	तो कहना	सब तारीफ़

لِلّٰهِ	الَّذِيْ	نَجّٰنَا	مِنَ الْقَوْمِ	الظّٰلِمِيْنَ (28)	وَقُلْ	رَّبِّ
अल्लाह के लिए है	जिसने	निजात दी हमें	उन लोगों से	जो ज़ालिम हैं	और कहना	ऐ मेरे रब

اَنْزِلْنِيْ	مُنْزَلًا	مُّبٰرَكًا	وَّاَنْتَ	خَيْرُ	الْمُنْزِلِيْنَ (29)	اِنَّ	فِيْ ذٰلِكَ
उतार मुझे	उतारने की जगह	बाबरकत	और तू	बेहतर है	सब उतारने वालों से	बेशक	इसमें

لَاٰيٰتٍ	وَّاِنْ	كُنَّا	لَمُبْتَلِيْنَ (30)	ثُمَّ	اَنْشَاْنَا	مِنْۢ بَعْدِهِمْ
अलबत्ता निशानियां हैं	और बेशक	हैं हम	अलबत्ता आज़माने वाले	फिर	उठाए हमने	बाद इनके

قَرْنًا	اٰخَرِيْنَ (31) ج	فَاَرْسَلْنَا	فِيْهِمْ	رَسُوْلًا	مِّنْهُمْ	اَنِ	اعْبُدُوا
लोग	दूसरे	तो भेजा हमने	इनमें	एक रसूल	इन्हीं में से	कि	इबादत करो

ع 2 10 2

اللّٰهَ	مَا	لَكُمْ	مِّنْ اِلٰهٍ	غَيْرُهٗ ط	اَفَلَا	تَتَّقُوْنَ (32) ع	وَقَالَ
अल्लाह की	नहीं	तुम्हारे लिए	कोई इलाह (बरहक़)	उसके सिवा	क्या फिर नहीं	तुम डरते	और कहा

الْمَلَاُ	مِنْ قَوْمِهِ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	وَكَذَّبُوْا	بِلِقَآءِ	الْاٰخِرَةِ
सरदारों ने	उसकी क़ौम से	जिन्होंने	कुफ़्र किया	और झुठलाया	मुलाक़ात को	आख़िरत की

وَاَتْرَفْنٰهُمْ	فِي الْحَيٰوةِ	الدُّنْيَا لا	مَا	هٰذَآ	اِلَّا	بَشَرٌ	مِّثْلُكُمْ لا
और ख़ुशहाली दी हमने उन्हें	ज़िंदगी में	दुनिया की	नहीं	ये	मगर	एक इंसान	तुम्हारे जैसा

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

يَاْكُلُ	مِمَّا	تَاْكُلُوْنَ	مِنْهُ	وَيَشْرَبُ	مِمَّا	تَشْرَبُوْنَ (33)	وَلَئِنْ
वो खाता है	उससे जो	तुम खाते हो	जिससे	और वो पीता है	उससे जो	तुम पीते हो	और अलबत्ता अगर

اَطَعْتُمْ	بَشَرًا	مِّثْلَكُمْ	اِنَّكُمْ	اِذًا	لَّخٰسِرُوْنَ (34)	اَيَعِدُكُمْ
इताअत की तुमने	एक इंसान की	अपने जैसे	यक़ीनन तुम	तब होगे	अलबत्ता ख़सारा पाने वाले	क्या वो वादा देता है तुम्हें

اَنَّكُمْ	اِذَا	مِتُّمْ	وَكُنْتُمْ	تُرَابًا	وَّعِظَامًا	اَنَّكُمْ	مُّخْرَجُوْنَ (35)
कि बेशक तुम	जब	मर जाओगे तुम	और हो जाओगे तुम	मिट्टी	और हड्डियां	बेशक तुम	निकाले जाने वाले हो

هَيْهَاتَ	هَيْهَاتَ	لِمَا	تُوْعَدُوْنَ (36)	اِنْ	هِيَ	اِلَّا	حَيَاتُنَا
बहुत दूर है	बहुत दूर है	वो जो	तुम वादा दिए जा रहे हो	नहीं	ये	मगर	ज़िंदगी हमारी

الدُّنْيَا	نَمُوْتُ	وَنَحْيَا	وَمَا	نَحْنُ	بِمَبْعُوْثِيْنَ (37)	اِنْ	هُوَ	اِلَّا
दुनिया की	हम मरते हैं	और हम जीते हैं	और नहीं	हम	उठाए जाने वाले	नहीं	वो	मगर

رَجُلٌ	افْتَرٰى	عَلَى اللّٰهِ	كَذِبًا	وَّمَا	نَحْنُ	لَهٗ	بِمُؤْمِنِيْنَ (38)
एक मर्द	उसने गढ़ लिया	अल्लाह पर	झूठ	और नहीं	हम	उसे	मानने वाले

قَالَ	رَبِّ	انْصُرْنِيْ	بِمَا	كَذَّبُوْنِ (39)	قَالَ	عَمَّا	قَلِيْلٍ
कहा	ऐ मेरे रब	मदद कर मेरी	बवजह उसके जो	उन्होंने झुठलाया मुझे	कहा	इस (मुद्दत) में जो	थोड़ी है

لَيُصْبِحُنَّ	نٰدِمِيْنَ (40)	فَاَخَذَتْهُمُ	الصَّيْحَةُ	بِالْحَقِّ	فَجَعَلْنٰهُمْ
अलबत्ता वो ज़रूर हो जाऐंगे	नादिम	तो पकड़ लिया उन्हें	चिंघाड़ ने	साथ हक़ के	तो कर दिया हमने उन्हें

غُثَآءً	فَبُعْدًا	لِّلْقَوْمِ	الظّٰلِمِيْنَ (41)	ثُمَّ	اَنْشَاْنَا	مِنْۢ بَعْدِهِمْ
कूड़ा करकट	तो दूरी है	उन लोगों के लिए	जो ज़ालिम हैं	फिर	उठाई हमने	बाद उनके

قُرُوْنًا	اٰخَرِيْنَ (42)	مَا	تَسْبِقُ	مِنْ اُمَّةٍ	اَجَلَهَا	وَمَا
क़ौमें	दूसरी	ना	आगे बढ़ सकती है	कोई उम्मत	अपने मुक़र्रर वक़्त से	और ना

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

يَسْتَاْخِرُوْنَ ﴿43﴾ ط	ثُمَّ	اَرْسَلْنَا	رُسُلَنَا	تَتْرَا ط	كُلَّمَا	جَآءَ	اُمَّةً
वो पीछे रह सकती है	फिर	भेजा हमने	अपने रसूलों को	पै दर पै	जब कभी	आया	किसी उम्मत में

رَّسُوْلُهَا	كَذَّبُوْهُ	فَاَتْبَعْنَا	بَعْضَهُمْ	بَعْضًا	وَّجَعَلْنٰهُمْ
रसूल उसका	उन्होंने झुठला दिया उसे	तो पीछे लाए हम	उनके बाज़ को	बाज़ के	और बना दिया हमने उन्हें

اَحَادِيْثَ ج	فَبُعْدًا	لِّقَوْمٍ	لَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿44﴾	ثُمَّ	اَرْسَلْنَا	مُوْسٰى
क़िस्से कहानियां	तो दूरी है	उन लोगों के लिए	जो नहीं ईमान लाते	फिर	भेजा हमने	मूसा

وَاَخَاهُ	هٰرُوْنَ لا	بِاٰيٰتِنَا	وَسُلْطٰنٍ	مُّبِيْنٍ ﴿45﴾ لا	اِلٰى فِرْعَوْنَ
और उसके भाई	हारून को	साथ अपनी निशानियों के	और दलील	वाज़ेह के	तरफ़ फ़िरऔन

وَمَلَا۟ئِهٖ	فَاسْتَكْبَرُوْا	وَكَانُوْا	قَوْمًا	عَالِيْنَ ﴿46﴾ ج	فَقَالُوْٓا
और उसके सरदारों के	तो उन्होंने तकब्बुर किया	और थे वो	लोग	सरकश	तो वो कहने लगे

اَنُؤْمِنُ	لِبَشَرَيْنِ	مِثْلِنَا	وَقَوْمُهُمَا	لَنَا	عٰبِدُوْنَ ﴿47﴾ ج
क्या हम ईमान लाएं	दो इंसानों पर	अपने जैसे	और क़ौम इन दोनों की	हमारे लिए	ताबेअदार है

فَكَذَّبُوْهُمَا	فَكَانُوْا	مِنَ الْمُهْلَكِيْنَ ﴿48﴾	وَلَقَدْ	اٰتَيْنَا	مُوْسَى
तो उन्होंने झुठला दिया उन दोनों को	तो हो गए वो	हलाक होने वालों में से	और अलबत्ता तहक़ीक़	दी हमने	मूसा को

الْكِتٰبَ	لَعَلَّهُمْ	يَهْتَدُوْنَ ﴿49﴾	وَجَعَلْنَا	ابْنَ مَرْيَمَ	وَاُمَّهٗٓ	اٰيَةً
किताब	ताकि वो	वो हिदायत पाएं	और बनाया हमने	इब्ने मरयम	और उसकी मां को	एक निशानी

وَّاٰوَيْنٰهُمَآ	اِلٰى رَبْوَةٍ	ذَاتِ قَرَارٍ	وَّمَعِيْنٍ ﴿50﴾ ع	يٰٓاَيُّهَا	الرُّسُلُ
और पनाह दी हमने उन दोनों को	तरफ़ बुलंद जगह के	क़रार/सुकून वाली	और बहते चश्मे वाली	ऐ	पैग़म्बरो

ع 3 18 3

كُلُوْا	مِنَ الطَّيِّبٰتِ	وَاعْمَلُوْا	صَالِحًا ط	اِنِّيْ	بِمَا	تَعْمَلُوْنَ
खाओ	पाकीज़ा चीज़ों में से	और अमल करो	नेक	बेशक मैं	उसे जो	तुम अमल करते हो

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

عَلِيْمٌ ﴿51﴾	وَاِنَّ	هٰذِهٖٓ	اُمَّتُكُمْ	اُمَّةً	وَّاحِدَةً	وَّاَنَا	رَبُّكُمْ
ख़ूब जानने वाला हूं	और बेशक	ये	उम्मत तुम्हारी	उम्मत है	एक ही	और मैं	रब हूं तुम्हारा

فَاتَّقُوْنِ ﴿52﴾	فَتَقَطَّعُوْٓا	اَمْرَهُمْ	بَيْنَهُمْ	زُبُرًا	كُلُّ حِزْبٍ
पस डरो मुझसे	तो उन्होंने जुदा-जुदा कर लिया	मामला अपना	आपस में	टुकड़े-टुकड़े करके	हर फ़िरक़ा/गिरोह (के लोग)

بِمَا	لَدَيْهِمْ	فَرِحُوْنَ ﴿53﴾	فَذَرْهُمْ	فِيْ غَمْرَتِهِمْ	حَتّٰى حِيْنٍ ﴿54﴾
उस पर जो	उनके पास है	ख़ुश हैं	तो छोड़ दीजिए उन्हें	उनकी ग़फ़लत में	एक वक़्त तक

اَيَحْسَبُوْنَ	اَنَّمَا	نُمِدُّهُمْ	بِهٖ	مِنْ مَّالٍ	وَّبَنِيْنَ ﴿55﴾
क्या वो समझते हैं	कि बेशक	जो हम मदद दे रहे हैं उन्हें	साथ किसी भी (चीज़) के	माल से	और बेटों से

نُسَارِعُ	لَهُمْ	فِي الْخَيْرٰتِ	بَلْ	لَّا يَشْعُرُوْنَ ﴿56﴾	اِنَّ	الَّذِيْنَ
कि हम जल्दी कर रहे हैं	उनके लिए	भलाइयों में	बल्कि	वो शऊर नहीं रखते	बेशक	वो जो

هُمْ	مِّنْ خَشْيَةِ	رَبِّهِمْ	مُّشْفِقُوْنَ ﴿57﴾	وَالَّذِيْنَ	هُمْ	بِاٰيٰتِ	رَبِّهِمْ
वो	ख़ौफ़ से	अपने रब के	डरने वाले हैं	और वो जो	वो	आयात पर	अपने रब की

يُؤْمِنُوْنَ ﴿58﴾	وَالَّذِيْنَ	هُمْ	بِرَبِّهِمْ	لَا يُشْرِكُوْنَ ﴿59﴾	وَالَّذِيْنَ	يُؤْتُوْنَ
वो ईमान लाते हैं	और वो जो	वो	अपने रब के साथ	नहीं वो शरीक करते	और वो जो	देते हैं

مَآ	اٰتَوْا	وَّقُلُوْبُهُمْ	وَجِلَةٌ	اَنَّهُمْ	اِلٰى رَبِّهِمْ	رٰجِعُوْنَ ﴿60﴾
जो कुछ	वो देते हैं	जब कि दिल उनके	लरज़ते हैं	कि बेशक वो	तरफ़ अपने रब के	लौटने वाले हैं

اُولٰٓئِكَ	يُسٰرِعُوْنَ	فِي الْخَيْرٰتِ	وَهُمْ	لَهَا	سٰبِقُوْنَ ﴿61﴾	وَلَا
यही लोग हैं	वो जल्दी करते हैं	भलाईयों में	और वो ही	उनके लिए	सबक़त करने वाले हैं	और नहीं

نُكَلِّفُ	نَفْسًا	اِلَّا	وُسْعَهَا	وَلَدَيْنَا	كِتٰبٌ	يَّنْطِقُ	بِالْحَقِّ
हम तकलीफ़ देते	किसी नफ़्स को	मगर	उसकी वुसअत के मुताबिक़	और हमारे पास	एक किताब है	जो बोलती है	साथ हक़ के

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَهُمْ	لَا يُظْلَمُوْنَ (62)	بَلْ	قُلُوْبُهُمْ	فِيْ غَمْرَةٍ	مِّنْ هٰذَا	وَلَهُمْ
और वो	ना वो ज़ुल्म किए जाएंगे	बल्कि	दिल उनके	ग़फ़लत में हैं	इससे	और उनके लिए

اَعْمَالٌ	مِّنْ دُوْنِ	ذٰلِكَ	هُمْ	لَهَا	عٰمِلُوْنَ (63)	حَتّٰٓى	اِذَآ
कई आमाल हैं	इलावा	उसके	वो	उन्हें	करने वाले हैं	यहां तक कि	जब

اَخَذْنَا	مُتْرَفِيْهِمْ	بِالْعَذَابِ	اِذَا	هُمْ	يَجْـَٔرُوْنَ (64) ط	لَا تَجْـَٔرُوا
पकड़ेंगे हम	उनके ख़ुशहाल लोगों को	साथ अज़ाब के	तब यकायक	वो	चिल्लाने लगेंगे	ना तुम चिल्लाओ

اَلْيَوْمَ قف	اِنَّكُمْ	مِّنَّا	لَا تُنْصَرُوْنَ (65)	قَدْ	كَانَتْ	اٰيٰتِيْ	تُتْلٰى
आज	बेशक तुम	हमसे	ना तुम मदद किए जाओगे	तहक़ीक़	थीं	मेरी आयात	पढ़ी जातीं

عَلَيْكُمْ	فَكُنْتُمْ	عَلٰٓى اَعْقَابِكُمْ	تَنْكِصُوْنَ (66) لا	مُسْتَكْبِرِيْنَ صلے	بِهٖ
तुम पर	तो थे तुम	अपनी एड़ियों पर	तुम फिर जाते	तकब्बुर करते हुए	साथ इसके

سٰمِرًا	تَهْجُرُوْنَ (67)	اَفَلَمْ	يَدَّبَّرُوا	الْقَوْلَ	اَمْ	جَآءَهُمْ
रात को बातें करते हुए	तुम बेहूदा गोई करते थे	क्या भला नहीं	उन्होंने ग़ौरो-फ़िक्र किया	कलाम में	या	आया उनके पास

مَّا	لَمْ	يَاْتِ	اٰبَآءَهُمُ	الْاَوَّلِيْنَ (68) ز	اَمْ	لَمْ	يَعْرِفُوْا
जो	नहीं	आया	उनके आबा ओ अजदाद के पास	पहले	या	नहीं	उन्होंने पहचाना

رَسُوْلَهُمْ	فَهُمْ	لَهٗ	مُنْكِرُوْنَ (69) ز	اَمْ	يَقُوْلُوْنَ	بِهٖ	جِنَّةٌ ط
अपने रसूल को	तो वो	उसके	इंकारी हैं	या	वो कहते हैं	इसे	जुनून है

بَلْ	جَآءَهُمْ	بِالْحَقِّ	وَاَكْثَرُهُمْ	لِلْحَقِّ	كٰرِهُوْنَ (70)	وَلَوِ	اتَّبَعَ
बल्कि	वो लाया है उनके पास	हक़	और अक्सर उनके	हक़ को	नापसंद करने वाले हैं	और अगर	पैरवी करता

الْحَقُّ	اَهْوَآءَهُمْ	لَفَسَدَتِ	السَّمٰوٰتُ	وَالْاَرْضُ	وَمَنْ	فِيْهِنَّ ط
हक़	उनकी ख़्वाहिशात की	अलबत्ता बिगड़ जाते	आसमान	और ज़मीन	और जो कोई	इनमें है

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

بَلْ	اَتَيْنٰهُمْ	بِذِكْرِهِمْ	فَهُمْ	عَنْ ذِكْرِهِمْ	مُّعْرِضُوْنَ (71) ط	اَمْ
बल्कि	लाए हैं हम इनके पास	ज़िक्र इनका	तो वो	अपने ही ज़िक्र से	मुंह मोड़ने वाले हैं	या

تَسْـَٔلُهُمْ	خَرْجًا	فَخَرَاجُ	رَبِّكَ	خَيْرٌ صلے	وَّهُوَ	خَيْرُ
आप सवाल करते हैं इनसे	माल/अदायगी का	तो ख़िराज/अजरो सवाब	आपके रब का	बेहतर है	और वो	बेहतर है

ع

الرّٰزِقِيْنَ (72)	وَاِنَّكَ	لَتَدْعُوْهُمْ	اِلٰى صِرَاطٍ	مُّسْتَقِيْمٍ (73)	وَاِنَّ
सब रिज़्क़ देने वालों से	और बेशक आप	अलबत्ता आप बुलाते हैं उन्हें	तरफ़ रास्ते	सीधे के	और बेशक

الَّذِيْنَ	لَا يُؤْمِنُوْنَ	بِالْاٰخِرَةِ	عَنِ الصِّرَاطِ	لَنٰكِبُوْنَ (74)	وَلَوْ
वो जो	नहीं वो ईमान लाते	आख़िरत पर	रास्ते से	अलबत्ता हट जाने वाले हैं	और अगर

رَحِمْنٰهُمْ	وَكَشَفْنَا	مَا	بِهِمْ	مِّنْ ضُرٍّ	لَّلَجُّوْا	فِيْ طُغْيَانِهِمْ
रहम करें हम उन पर	और खोल दें हम	जो	उन्हें है	तकलीफ़ में से	अलबत्ता वो अड़े रहेंगे	अपनी सरकशी में

يَعْمَهُوْنَ (75)	وَلَقَدْ	اَخَذْنٰهُمْ	بِالْعَذَابِ	فَمَا	اسْتَكَانُوْا
भटकते हुए	और अलबत्ता तहक़ीक़	पकड़ लिया हमने उन्हें	साथ अज़ाब के	पस ना	उन्होंने आजिज़ी की

لِرَبِّهِمْ	وَمَا	يَتَضَرَّعُوْنَ (76)	حَتّٰٓى	اِذَا	فَتَحْنَا	عَلَيْهِمْ	بَابًا
अपने रब के लिए	और ना	वो गिड़ गिड़ाए	यहां तक की	जब	खोल दिया हमने	उन पर	दरवाज़ा

ع 4 27 4

ذَا عَذَابٍ شَدِيْدٍ	اِذَا	هُمْ	فِيْهِ	مُبْلِسُوْنَ (77) ع	وَهُوَ	الَّذِيْٓ
सख़्त अज़ाब वाला	यकायक	वो	उसमें	मायूस होने वाले थे	और वो ही है	जिसने

اَنْشَاَ	لَكُمُ	السَّمْعَ	وَالْاَبْصَارَ	وَالْاَفْـِٕدَةَ ط	قَلِيْلًا مَّا
पैदा किए	तुम्हारे लिए	कान	और आंखें	और दिल	कितना कम

تَشْكُرُوْنَ (78)	وَهُوَ	الَّذِيْ	ذَرَاَكُمْ	فِي الْاَرْضِ	وَاِلَيْهِ
तुम शुक्र अदा करते हो	और वो ही है	जिसने	फैला दिया तुम्हें	ज़मीन में	और तरफ़ उसी के

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

تُحْشَرُوْنَ (79)	وَهُوَ	الَّذِىْ	يُحْىٖ	وَيُمِيْتُ	وَلَهُ	اخْتِلَافُ
तुम इकट्ठे किए जाओगे	और वो ही है	जो	ज़िंदा करता है	और वो मौत देता है	और उसी के लिए है	आगे-पीछे आना

الَّيْلِ	وَالنَّهَارِ ؕ	اَفَلَا	تَعْقِلُوْنَ (80)	بَلْ	قَالُوْا	مِثْلَ	مَا
रात	और दिन का	क्या फिर नहीं	तुम अक़्ल से काम लेते	बल्कि	उन्होंने कहा	मानिंद	उसके जो

قَالَ	الْاَوَّلُوْنَ (81)	قَالُوْٓا	ءَاِذَا	مِتْنَا	وَكُنَّا	تُرَابًا
कहा था	पहलों ने	उन्होंने कहा	क्या जब	मर जाऐंगे हम	और हो जाऐंगे हम	मिट्टी

وَّعِظَامًا	ءَاِنَّا	لَمَبْعُوْثُوْنَ (82)	لَقَدْ	وُعِدْنَا	نَحْنُ	وَاٰبَآؤُنَا
और हड्डियां	क्या वाक़ई हम	अलबत्ता उठाए जाने वाले हैं	अलबत्ता तहक़ीक़	वादा किए गए हम	हम	और आबा ओ अजदाद हमारे

هٰذَا	مِنْ قَبْلُ	اِنْ	هٰذَآ	اِلَّآ	اَسَاطِيْرُ	الْاَوَّلِيْنَ (83)	قُلْ
इसका	इससे क़ब्ल	नहीं	ये	मगर	कहानियां हैं	पहलों की	कह दीजिए

لِّمَنِ	الْاَرْضُ	وَمَنْ	فِيْهَآ	اِنْ	كُنْتُمْ	تَعْلَمُوْنَ (84)
किसके लिए है	ज़मीन	और जो कुछ	इसमें है	अगर	हो तुम	तुम जानते

سَيَقُوْلُوْنَ	لِلّٰهِ ؕ	قُلْ	اَفَلَا	تَذَكَّرُوْنَ (85)	قُلْ	مَنْ	رَّبُّ
अनक़रीब वो कहेंगे	अल्लाह ही के लिए	कह दीजिए	क्या फिर नहीं	तुम नसीहत पकड़ते	कह दीजिए	कौन	रब है

السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ	وَرَبُّ	الْعَرْشِ	الْعَظِيْمِ (86)	سَيَقُوْلُوْنَ	لِلّٰهِ ؕ
सात आसमानों का	और रब है	अर्शे	अज़ीम का	अनक़रीब वो कहेंगे	अल्लाह ही के लिए

قُلْ	اَفَلَا	تَتَّقُوْنَ (87)	قُلْ	مَنْۢ	بِيَدِهٖ	مَلَكُوْتُ	كُلِّ
कह दीजिए	क्या भला नहीं	तुम डरते	कह दीजिए	कौन है	जिसके हाथ में है	बादशाहत	हर

شَيْءٍ	وَّهُوَ	يُجِيْرُ	وَلَا	يُجَارُ	عَلَيْهِ	اِنْ	كُنْتُمْ	تَعْلَمُوْنَ (88)
चीज़ की	और वो	वो पनाह देता है	और नहीं	पनाह दी जा सकती	उसके ख़िलाफ़	अगर	हो तुम	तुम इल्म रखते

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

سَيَقُوْلُوْنَ	لِلّٰهِ ؕ	قُلْ	فَاَنّٰى	تُسْحَرُوْنَ (89)	بَلْ	اَتَيْنٰهُمْ
अनक़रीब वो कहेंगे	अल्लाह ही के लिए	कह दीजिए	तो कहां से	तुम मसहूर किए जाते हो	बल्कि	हम लाए हैं उनके पास

بِالْحَقِّ	وَاِنَّهُمْ	لَكٰذِبُوْنَ (90)	مَا	اتَّخَذَ	اللّٰهُ	مِنْ وَّلَدٍ	وَّمَا
हक़ को	और बेशक वो	अलबत्ता झूठे हैं	नहीं	बनाई	अल्लाह ने	कोई औलाद	और नहीं

كَانَ	مَعَهٗ	مِنْ اِلٰهٍ	اِذًا	لَّذَهَبَ	كُلُّ	اِلٰهٍ	بِمَا	خَلَقَ
है	साथ उसके	कोई इलाह	तब	अलबत्ता ले जाता	हर	इलाह	उसे जो	उसने पैदा किया

وَلَعَلَا	بَعْضُهُمْ	عَلٰى بَعْضٍ ؕ	سُبْحٰنَ	اللّٰهِ	عَمَّا	يَصِفُوْنَ (91) لا
और अलबत्ता चढ़ाई करता	बाज़ उनका	बाज़ पर	पाक है	अल्लाह	उससे जो	वो बयान करते हैं

عٰلِمِ	الْغَيْبِ	وَالشَّهَادَةِ	فَتَعٰلٰى	عَمَّا	يُشْرِكُوْنَ (92) ع	قُلْ	ع 5 15 5
जानने वाला है	ग़ैब	और हाज़िर का	पस वो बहुत बुलंद है	उससे जो	वो शरीक करते हैं	कह दीजिए	

رَّبِّ	اِمَّا	تُرِيَنِّيْ	مَا	يُوْعَدُوْنَ (93) لا	رَبِّ	فَلَا	تَجْعَلْنِيْ
ऐ मेरे रब	अगर	तू दिखाए मुझे	जो	वो वादा किए जाते हैं	ऐ मेरे रब	तो ना	तू करना मुझे

فِي الْقَوْمِ	الظّٰلِمِيْنَ (94)	وَاِنَّا	عَلٰٓى	اَنْ	نُّرِيَكَ	مَا
उन लोगों में से	जो ज़ालिम हैं	और बेशक हम	इस (बात) पर	कि	हम दिखाऐं आपको	जिसका

نَعِدُهُمْ	لَقٰدِرُوْنَ (95)	اِدْفَعْ	بِالَّتِيْ	هِيَ	اَحْسَنُ
हम वादा कर रहे हैं उनसे	अलबत्ता क़ादिर हैं	दूर कर दीजिए	उस (तरीक़े) से	वो (जो)	ज़्यादा अच्छा है

السَّيِّئَةَ ؕ	نَحْنُ	اَعْلَمُ	بِمَا	يَصِفُوْنَ (96)	وَقُلْ	رَّبِّ
बुराई को	हम	ख़ूब जानते हैं	उसे जो	वो बयान करते हैं	और कह दीजिए	ऐ मेरे रब

اَعُوْذُ بِكَ	مِنْ هَمَزٰتِ	الشَّيٰطِيْنِ (97) لا	وَاَعُوْذُ بِكَ	رَبِّ	اَنْ
मैं पनाह लेता हूं तेरी	वसवसों से	शैतानों के	और मैं पनाह लेता हूं तेरी	ऐ मेरे रब	इससे कि

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

يَّحْضُرُوْنِ (98)	حَتّٰٓى	اِذَا	جَآءَ	اَحَدَهُمُ	الْمَوْتُ	قَالَ	رَبِّ
वो हाज़िर हों मेरे पास	यहां तक कि	जब	आ जाएगी	उनमें से एक को	मौत	कहेगा	ऐ मेरे रब

ارْجِعُوْنِ (99) لا	لَعَلِّيْٓ	اَعْمَلُ	صَالِحًا	فِيْمَا	تَرَكْتُ	كَلَّا ط	اِنَّهَا
वापस लौटा दो मुझे	ताकि मैं	मैं अमल करूं	नेक	उसमें जो	छोड़ आया मैं	हरगिज़ नहीं	बेशक वो

كَلِمَةٌ	هُوَ	قَآئِلُهَا ط	وَمِنْ وَّرَآئِهِمْ	بَرْزَخٌ	اِلٰى يَوْمِ	يُبْعَثُوْنَ (100)
एक बात है	वो	कहने वाला है उसे	और आगे उनके	बरज़ख़ है	उस दिन तक	वो सब उठाए जाएंगे

فَاِذَا	نُفِخَ	فِي الصُّوْرِ	فَلَآ	اَنْسَابَ	بَيْنَهُمْ	يَوْمَئِذٍ	وَّلَا
फिर जब	फूंक मारी जाएगी	सूर में	तो नहीं	रिश्तेदारियां	दर्मियान उनके	उस दिन	और ना

يَتَسَآءَلُوْنَ (101)	فَمَنْ	ثَقُلَتْ	مَوَازِيْنُهٗ	فَاُولٰٓئِكَ	هُمُ	الْمُفْلِحُوْنَ (102)
वो एक दूसरे से सवाल करेंगे	तो जो कोई	भारी हुए	पलड़े उसके	तो यही लोग हैं	वो	जो फ़लाह पाने वाले हैं

وَمَنْ	خَفَّتْ	مَوَازِيْنُهٗ	فَاُولٰٓئِكَ	الَّذِيْنَ	خَسِرُوْٓا	اَنْفُسَهُمْ
और जो कोई कि	हल्के हुए	पलड़े उसके	तो यही लोग हैं	वो जिन्होंने	ख़सारे में डाला	अपने आपको

فِيْ جَهَنَّمَ	خٰلِدُوْنَ (103) ج	تَلْفَحُ	وُجُوْهَهُمُ	النَّارُ	وَهُمْ	فِيْهَا
जहन्नम में	हमेशा रहने वाले हैं	झुलसा देगी	उनके चेहरों को	आग	और वो	उसमें

كٰلِحُوْنَ (104)	اَلَمْ	تَكُنْ	اٰيٰتِيْ	تُتْلٰى	عَلَيْكُمْ	فَكُنْتُمْ	بِهَا
मुंह बिगाड़ने वाले होंगे	क्या ना	थीं	आयात मेरी	पढ़ी जातीं	तुम पर	तो थे तुम	उन्हें

تُكَذِّبُوْنَ (105)	قَالُوْا	رَبَّنَا	غَلَبَتْ	عَلَيْنَا	شِقْوَتُنَا	وَكُنَّا
तुम झुठलाते	वो कहेंगे	ऐ हमारे रब	ग़ालिब आ गई	हम पर	बदबख़्ती हमारी	और थे हम

قَوْمًا	ضَآلِّيْنَ (106)	رَبَّنَآ	اَخْرِجْنَا	مِنْهَا	فَاِنْ	عُدْنَا	فَاِنَّا
लोग	गुमराह	ऐ हमारे रब	निकाल दे हमें	इससे	फिर अगर	दोबारा करें हम	तो बेशक हम

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

ظٰلِمُوْنَ (107)	قَالَ	اخْسَـُٔوْا	فِيْهَا	وَلَا	تُكَلِّمُوْنِ (108)	اِنَّهٗ
ज़ालिम होंगे	वो फ़रमाएगा	पड़े रहो फिटकारे हुए	इसी में	और ना	तुम कलाम करो मुझसे	बेशक वो

كَانَ	فَرِيْقٌ	مِّنْ عِبَادِيْ	يَقُوْلُوْنَ	رَبَّنَآ	اٰمَنَّا	فَاغْفِرْ
था	एक गिरोह	मेरे बंदों में से	वो कहते थे	ऐ हमारे रब	ईमान लाए हम	पस बख़्श दे

لَنَا	وَارْحَمْنَا	وَاَنْتَ	خَيْرُ	الرّٰحِمِيْنَ (109)	فَاتَّخَذْتُمُوْهُمْ	سِخْرِيًّا
हमें	और रहम फ़रमा हम पर	और तू	बेहतर है	सब रहम करने वालों में	तो बना लिया तुमने उन्हें	मज़ाक़

حَتّٰٓى	اَنْسَوْكُمْ	ذِكْرِيْ	وَكُنْتُمْ	مِّنْهُمْ	تَضْحَكُوْنَ (110)	اِنِّيْ
यहां तक कि	उन्होंने भुलवा दिया तुम्हें	ज़िक्र मेरा	और थे तुम	उनसे	तुम हंसी किया करते	बेशक मैं

جَزَيْتُهُمُ	الْيَوْمَ	بِمَا	صَبَرُوْٓا	اَنَّهُمْ	هُمُ	الْفَآئِزُوْنَ (111)
बदला दिया मैंने उन्हें	आज	बवजह उसके जो	उन्होंने सब्र किया	बेशक वो	वो ही	कामयाब होने वाले हैं

قٰلَ	كَمْ	لَبِثْتُمْ	فِي الْاَرْضِ	عَدَدَ	سِنِيْنَ (112)	قَالُوْا	لَبِثْنَا
वो फ़रमाएगा	कितना	ठहरे तुम	ज़मीन में	गिनती में	सालों की	वो कहेंगे	ठहरे हम

يَوْمًا	اَوْ	بَعْضَ	يَوْمٍ	فَسْـَٔلِ	الْعَآدِّيْنَ (113)	قٰلَ	اِنْ	لَّبِثْتُمْ
एक दिन	या	कुछ हिस्सा	दिन का	पस पूछ लीजिए	गिनने वालों से	वो फ़रमाएगा	नहीं	ठहरे तुम

اِلَّا	قَلِيْلًا	لَّوْ	اَنَّكُمْ	كُنْتُمْ	تَعْلَمُوْنَ (114)	اَفَحَسِبْتُمْ	اَنَّمَا
मगर	बहुत थोड़ा	काश	कि बेशक तुम	होते तुम	तुम जानते	क्या भला समझा था तुमने	कि बेशक

خَلَقْنٰكُمْ	عَبَثًا	وَّاَنَّكُمْ	اِلَيْنَا	لَا تُرْجَعُوْنَ (115)	فَتَعٰلَى	اللّٰهُ
पैदा किया हमने तुम्हें	बेकार	और बेशक तुम	तरफ़ हमारे	ना तुम लौटाए जाओगे	तो बहुत बुलंद है	अल्लाह

الْمَلِكُ	الْحَقُّ	لَآ	اِلٰهَ	اِلَّا	هُوَ	رَبُّ	الْعَرْشِ	الْكَرِيْمِ (116)
बादशाह	हक़ीक़ी	नहीं	कोई इलाह (बरहक़)	मगर	वो ही	रब है	अर्शे	करीम का

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَمَنْ	يَّدْعُ	مَعَ	اللّٰهِ	اِلٰهًا	اٰخَرَ	لَا بُرْهَانَ	لَهٗ	بِهٖ
और जो	पुकारे	साथ	अल्लाह के	इलाह	दूसरा	नहीं दलील	उसके लिए	इसकी

فَاِنَّمَا	حِسَابُهٗ	عِنْدَ	رَبِّهٖ	اِنَّهٗ	لَا يُفْلِحُ	الْكٰفِرُوْنَ (117)
तो बेशक	हिसाब है उसका	पास	उसके रब के	बेशक वो	नहीं वो फ़लाह पाएंगे	जो काफ़िर हैं

وَقُلْ	رَّبِّ	اغْفِرْ	وَارْحَمْ	وَاَنْتَ	خَيْرُ	الرّٰحِمِيْنَ (118) ع
और कह दीजिए	ऐ मेरे रब	बख़्श दे	और रहम फ़रमा	और तू	बेहतर है	सब रहम करने वालों से

ع 6 26 6

اٰيَاتُهَا: 64 — 24 سُوْرَةُ النُّوْرِ مَدَنِيَّةٌ 102 — رُكُوْعَاتُهَا: 9

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

سُوْرَةٌ	اَنْزَلْنٰهَا	وَفَرَضْنٰهَا	وَاَنْزَلْنَا	فِيْهَآ	اٰيٰتٍ	بَيِّنٰتٍ
ये एक सूरत है	नाज़िल किया हमने इसे	और फ़र्ज़ किया हमने इसे	और नाज़िल कीं हमने	इसमें	आयात	वाज़ेह

لَّعَلَّكُمْ	تَذَكَّرُوْنَ (1)	اَلزَّانِيَةُ	وَالزَّانِيْ	فَاجْلِدُوْا	كُلَّ	وَاحِدٍ
ताकि तुम	तुम नसीहत पकड़ो	ज़ानिया औरत	और ज़ानी मर्द	पस कोड़े मारो	हर	एक को

مِّنْهُمَا	مِائَةَ	جَلْدَةٍ	وَّلَا	تَاْخُذْكُمْ	بِهِمَا	رَاْفَةٌ
इन दोनों में से	सौ	कोड़े	और ना	पकड़े तुम्हें	इन दोनों के बारे में	कोई तरस

فِيْ دِيْنِ	اللّٰهِ	اِنْ	كُنْتُمْ	تُؤْمِنُوْنَ	بِاللّٰهِ	وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ
दीन (क़ानून) के मामले में	अल्लाह के	अगर	हो तुम	तुम ईमान रखते	अल्लाह पर	और आख़िरी दिन पर

وَلْيَشْهَدْ	عَذَابَهُمَا	طَآئِفَةٌ	مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ (2)	اَلزَّانِيْ	لَا يَنْكِحُ
और ज़रूर हाज़िर हो	उन दोनों की सज़ा पर	एक गिरोह	मोमिनों में से	ज़ानी मर्द	नहीं निकाह करता

اِلَّا	زَانِيَةً	اَوْ	مُشْرِكَةً	وَّالزَّانِيَةُ	لَا يَنْكِحُهَآ	اِلَّا	زَانٍ
मगर	ज़ानिया औरत से	या	मुशरिका औरत से	और ज़ानिया औरत	नहीं निकाह करता उससे	मगर	ज़ानी मर्द

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اَوْ	مُشْرِكٌ ۚ	وَحُرِّمَ	ذٰلِكَ	عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ ③	وَالَّذِيْنَ	يَرْمُوْنَ
या	मुशरिक मर्द	और हराम कर दिया गया	ये	मोमिनों पर	और वो लोग जो	तोहमत लगाएं

الْمُحْصَنٰتِ	ثُمَّ	لَمْ	يَاْتُوْا	بِاَرْبَعَةِ	شُهَدَآءَ	فَاجْلِدُوْهُمْ	ثَمٰنِيْنَ
पाक दामन औरतों पर	फिर	ना	वो लाएं	चार	गवाह	तो कोड़े मारो इन्हें	अस्सी

جَلْدَةً	وَّلَا	تَقْبَلُوْا	لَهُمْ	شَهَادَةً	اَبَدًا ۚ	وَاُولٰٓئِكَ	هُمُ
कोड़े	और ना	तुम क़ुबूल करो	उनकी	गवाही को	कभी भी	और यही लोग हैं	वो

الْفٰسِقُوْنَ ④ لا	اِلَّا	الَّذِيْنَ	تَابُوْا	مِنْۢ بَعْدِ	ذٰلِكَ	وَاَصْلَحُوْا ۚ
जो फ़ासिक़ हैं	सिवाए	उनके जिन्होंने	तौबा की	बाद	इसके	और उन्होंने इस्लाह कर ली

فَاِنَّ	اللّٰهَ	غَفُوْرٌ	رَّحِيْمٌ ⑤	وَالَّذِيْنَ	يَرْمُوْنَ	اَزْوَاجَهُمْ
तो बेशक	अल्लाह	बहुत बख़्शने वाला है	निहायत रहम करने वाला है	और वो लोग जो	तोहमत लगाते हैं	अपनी बीवियों पर

وَلَمْ	يَكُنْ	لَّهُمْ	شُهَدَآءُ	اِلَّآ	اَنْفُسُهُمْ	فَشَهَادَةُ	اَحَدِهِمْ
और नहीं	हैं	उनके लिए	कोई गवाह	मगर	वो ख़ुद ही	तो गवाही होगी	उनमें से एक की

اَرْبَعُ	شَهٰدٰتٍۭ	بِاللّٰهِ لا	اِنَّهٗ	لَمِنَ الصّٰدِقِيْنَ ⑥	وَالْخَامِسَةُ
चार	गवाहियां	साथ अल्लाह (की क़सम) के	बेशक वो	अलबत्ता सच्चों में से है	और पांचवीं बार

اَنَّ	لَعْنَتَ	اللّٰهِ	عَلَيْهِ	اِنْ	كَانَ	مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ⑦	وَيَدْرَؤُا
कि बेशक	लानत हो	अल्लाह की	उस पर	अगर	है वो	झूठों में से	और टाल देगी

عَنْهَا	الْعَذَابَ	اَنْ	تَشْهَدَ	اَرْبَعَ	شَهٰدٰتٍۭ	بِاللّٰهِ لا	اِنَّهٗ
उस (औरत) से	सज़ा को	ये (बात) कि	वो गवाही दे	चार	गवाहियां	अल्लाह की क़सम के साथ	बेशक वो

لَمِنَ الْكٰذِبِيْنَ ⑧ لا	وَالْخَامِسَةَ	اَنَّ	غَضَبَ	اللّٰهِ	عَلَيْهَآ	اِنْ
अलबत्ता झूठों में से है	और पांचवीं बार	कि बेशक	ग़ज़ब हो	अल्लाह का	उस (औरत) पर	अगर

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

كَانَ	مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ⑨	وَلَوْلَا	فَضْلُ	اللّٰهِ	عَلَيْكُمْ	وَرَحْمَتُهٗ
है वो (मर्द)	सच्चों में से	और अगर ना होता	फ़ज़्ल	अल्लाह का	तुम पर	और रहमत उसकी

ع 1 10 7

وَاَنَّ	اللّٰهَ	تَوَّابٌ	حَكِيْمٌ ⑩ ع	اِنَّ	الَّذِيْنَ	جَآءُوْ	بِالْاِفْكِ
और बेशक	अल्लाह	बहुत तौबा क़ुबूल करने वाला है	बहुत हिक्मत वाला है	बेशक	वो लोग जो	लाए हैं	बोहतान

عُصْبَةٌ	مِّنْكُمْ ؕ	لَا تَحْسَبُوْهُ	شَرًّا	لَّكُمْ ؕ	بَلْ	هُوَ	خَيْرٌ	لَّكُمْ ؕ
एक गिरोह हैं	तुम में से	ना तुम समझो उसे	बुरा	अपने लिए	बल्कि	वो	अच्छा है	तुम्हारे लिए

لِكُلِّ	امْرِئٍ	مِّنْهُمْ	مَّا	اكْتَسَبَ	مِنَ الْاِثْمِ ۚ	وَالَّذِيْ	تَوَلّٰى
वास्ते हर	शख़्स के है	उनमें से	जो	उसने कमाया	गुनाह से	और वो जिसने	उठाया

كِبْرَهٗ	مِنْهُمْ	لَهٗ	عَذَابٌ	عَظِيْمٌ ⑪	لَوْلَآ	اِذْ	سَمِعْتُمُوْهُ
बड़ा (बोझ) उसका	उनमें से	उसके लिए	अज़ाब है	बहुत बड़ा	क्यों ना	जब	सुना तुमने उसे

ظَنَّ	الْمُؤْمِنُوْنَ	وَالْمُؤْمِنٰتُ	بِاَنْفُسِهِمْ	خَيْرًا ۙ	وَّقَالُوْا	هٰذَآ
गुमान किया	मोमिन मर्दों ने	और मोमिन औरतों ने	अपने बारे में	अच्छा	और कहा उन्होंने	ये है

اِفْكٌ	مُّبِيْنٌ ⑫	لَوْلَا	جَآءُوْ	عَلَيْهِ	بِاَرْبَعَةِ	شُهَدَآءَ ۚ	فَاِذْ
बोहतान	खुला	क्यों ना	वो लाए	उस पर	चार	गवाह	फिर जब

لَمْ	يَاْتُوْا	بِالشُّهَدَآءِ	فَاُولٰٓئِكَ	عِنْدَ اللّٰهِ	هُمُ	الْكٰذِبُوْنَ ⑬
नहीं	वो लाए	गवाहों को	तो यही लोग हैं	अल्लाह के यहां	वो	जो झूठे हैं

وَلَوْلَا	فَضْلُ	اللّٰهِ	عَلَيْكُمْ	وَرَحْمَتُهٗ	فِي الدُّنْيَا	وَالْاٰخِرَةِ
और यक़ीनन ना होता	फ़ज़्ल	अल्लाह का	तुम पर	और रहमत उसकी	दुनिया में	और आख़िरत में

لَمَسَّكُمْ	فِيْ مَآ	اَفَضْتُمْ	فِيْهِ	عَذَابٌ	عَظِيْمٌ ⑭ ج	اِذْ	تَلَقَّوْنَهٗ
अलबत्ता पहुंच जाता तुम्हें	उस में से जो	पड़ गए थे तुम	जिसमें	अज़ाब	बहुत बड़ा	जब	तुम ले रहे थे उसे

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

بِاَلْسِنَتِكُمْ	وَ تَقُوْلُوْنَ	بِاَفْوَاهِكُمْ	مَّا	لَيْسَ	لَكُمْ	بِهٖ	عِلْمٌ
अपनी ज़बानों से	और तुम कह रहे थे	अपने मुंहों से	वो जो	नहीं (था)	तुम्हें	जिसका	कोई इल्म

وَّ تَحْسَبُوْنَهٗ	هَيِّنًا ۖ	وَّ هُوَ	عِنْدَ	اللّٰهِ	عَظِيْمٌ ⑮	وَ لَوْلَآ	اِذْ
और तुम समझ रहे थे उसे	मामूली	हालांकि वो	नज़्दीक	अल्लाह के	बहुत बड़ा था	और क्यों ना	जब

سَمِعْتُمُوْهُ	قُلْتُمْ	مَّا	يَكُوْنُ	لَنَآ	اَنْ	نَّتَكَلَّمَ	بِهٰذَا ۖ
सुना था तुमने उसे	कहा तुमने	नहीं	है	हमारे लिए	कि	हम कलाम करें	साथ इस (बात) के

سُبْحٰنَكَ	هٰذَا	بُهْتَانٌ	عَظِيْمٌ ⑯	يَعِظُكُمُ	اللّٰهُ	اَنْ	تَعُوْدُوْا
पाक है तू	ये है	बोहतान	बहुत बड़ा	नसीहत करता है तुम्हें	अल्लाह	कि	(ना) तुम दोबारा करना

لِمِثْلِهٖٓ	اَبَدًا	اِنْ	كُنْتُمْ	مُّؤْمِنِيْنَ ⑰ ج	وَ يُبَيِّنُ	اللّٰهُ	لَكُمُ
इस जैसा	कभी भी	अगर	हो तुम	ईमान लाने वाले	और बयान करता है	अल्लाह	तुम्हारे लिए

الْاٰيٰتِ ؕ	وَاللّٰهُ	عَلِيْمٌ	حَكِيْمٌ ⑱	اِنَّ	الَّذِيْنَ	يُحِبُّوْنَ	اَنْ
आयात को	और अल्लाह	ख़ूब इल्म वाला है	ख़ूब हिकमत वाला है	बेशक	वो लोग जो	पसंद करते हैं	कि

تَشِيْعَ	الْفَاحِشَةُ	فِي الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	لَهُمْ	عَذَابٌ	اَلِيْمٌ ۙ
फैले	बेहयाई	उन लोगों में जो	ईमान लाए	उनके लिए	अज़ाब है	दर्दनाक

فِي الدُّنْيَا	وَالْاٰخِرَةِ ؕ	وَاللّٰهُ	يَعْلَمُ	وَ اَنْتُمْ	لَا تَعْلَمُوْنَ ⑲
दुनिया में	और आख़िरत में	और अल्लाह	जानता है	और तुम	नहीं तुम जानते

وَ لَوْلَا	فَضْلُ	اللّٰهِ	عَلَيْكُمْ	وَ رَحْمَتُهٗ	وَ اَنَّ	اللّٰهَ	رَءُوْفٌ
और अगर ना होता	फ़ज़्ल	अल्लाह का	तुम पर	और रहमत उसकी	और बेशक	अल्लाह	बहुत शफ़क़त करने वाला है

رَّحِيْمٌ ⑳ ع	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	لَا تَتَّبِعُوْا	خُطُوٰتِ	الشَّيْطٰنِ ؕ
निहायत रहम करने वाला है	ऐ लोगो जो	ईमान लाए हो	ना तुम पैरवी करो	क़दमों की	शैतान के

ع 2 10 8 النصف

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَمَنْ	يَّتَّبِعْ	خُطُوٰتِ	الشَّيْطٰنِ	فَاِنَّهٗ	يَاْمُرُ	بِالْفَحْشَآءِ
और जो कोई	पैरवी करेगा	क़दमों की	शैतान के	तो बेशक वो	वो हुक्म देता है	बेहयाई का

وَالْمُنْكَرِ ؕ	وَلَوْلَا	فَضْلُ	اللّٰهِ	عَلَيْكُمْ	وَرَحْمَتُهٗ	مَا	زَكٰى
और बुराई का	और अगर ना होता	फ़ज़्ल	अल्लाह का	तुम पर	और रहमत उसकी	ना	पाक हो सकता

مِنْكُمْ	مِّنْ اَحَدٍ	اَبَدًا ۙ	وَّلٰكِنَّ	اللّٰهَ	يُزَكِّيْ	مَنْ	يَّشَآءُ ؕ
तुम में से	कोई एक	कभी भी	और लेकिन	अल्लाह	वो पाक करता है	जिसे	वो चाहता है

وَاللّٰهُ	سَمِيْعٌ	عَلِيْمٌ (21)	وَلَا	يَاْتَلِ	اُولُوا	الْفَضْلِ	مِنْكُمْ
और अल्लाह	ख़ूब सुनने वाला है	ख़ूब इल्म वाला है	और ना	क़सम खाऐं	साहिबे	फ़ज़्ल	तुम में से

وَالسَّعَةِ	اَنْ	يُّؤْتُوْٓا	اُولِي الْقُرْبٰى	وَالْمَسٰكِيْنَ	وَالْمُهٰجِرِيْنَ
और वुसअत वाले	कि	(ना) वो देंगे	रिश्तेदारों	और मिस्कीनों	और मुहाजिरीन को

فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۖ	وَلْيَعْفُوْا	وَلْيَصْفَحُوْا ؕ	اَلَا	تُحِبُّوْنَ	اَنْ
अल्लाह के रास्ते में	और चाहिए कि वो माफ़ कर दें	और चाहिए कि वो दरगुज़र करें	क्या नहीं	तुम पसंद करते	कि

يَّغْفِرَ	اللّٰهُ	لَكُمْ ؕ	وَاللّٰهُ	غَفُوْرٌ	رَّحِيْمٌ (22)	اِنَّ	الَّذِيْنَ
माफ़ कर दे	अल्लाह	तुम्हें	और अल्लाह	बहुत बख़्शने वाला है	निहायत रहम करने वाला है	बेशक	वो जो

يَرْمُوْنَ	الْمُحْصَنٰتِ	الْغٰفِلٰتِ	الْمُؤْمِنٰتِ	لُعِنُوْا	فِي الدُّنْيَا
तोहमत लगाते हैं	पाक दामन	बेख़बर/भोली-भाली	मोमिन औरतों पर	वो लानत किए गए	दुनिया में

وَالْاٰخِرَةِ ۖ	وَلَهُمْ	عَذَابٌ	عَظِيْمٌ (23) ۙ	يَّوْمَ	تَشْهَدُ	عَلَيْهِمْ
और आख़िरत में	और उनके लिए	अज़ाब है	बहुत बड़ा	जिस दिन	गवाही देंगी	उन पर

اَلْسِنَتُهُمْ	وَاَيْدِيْهِمْ	وَاَرْجُلُهُمْ	بِمَا	كَانُوْا	يَعْمَلُوْنَ (24)
ज़बानें उनकी	और हाथ उनके	और पांव उनके	उसकी जो	थे वो	वो अमल करते

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

يَوْمَئِذٍ	يُّوَفِّيْهِمُ	اللّٰهُ	دِيْنَهُمُ	الْحَقَّ	وَيَعْلَمُوْنَ	اَنَّ	اللّٰهَ
उस दिन	पूरा-पूरा देगा उन्हें	अल्लाह	बदला उनका	दुरुस्त	और वो जान लेंगे	बेशक	अल्लाह

هُوَ	الْحَقُّ	الْمُبِيْنُ (25)	اَلْخَبِيْثٰتُ	لِلْخَبِيْثِيْنَ	وَالْخَبِيْثُوْنَ
वो ही	हक़ है	ज़ाहिर करने वाला है	ख़बीस औरतें हैं	ख़बीस मर्दों के लिए	और ख़बीस मर्द हैं

لِلْخَبِيْثٰتِ ج	وَالطَّيِّبٰتُ	لِلطَّيِّبِيْنَ	وَالطَّيِّبُوْنَ	لِلطَّيِّبٰتِ ج	اُولٰٓئِكَ
ख़बीस औरतों के लिए	और पाकीज़ा औरतें हैं	पाकीज़ा मर्दों के लिए	और पाकीज़ा मर्द हैं	पाकीज़ा औरतों के लिए	यही लोग हैं

مُبَرَّءُوْنَ	مِمَّا	يَقُوْلُوْنَ ط	لَهُمْ	مَّغْفِرَةٌ	وَّرِزْقٌ	كَرِيْمٌ (26) ع	ع 3 6 9
मुबर्रा/पाक	उससे जो	वो कहते हैं	उनके लिए	बख़्शिश है	और रिज़्क़ है	इज़्ज़त वाला	

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	لَا تَدْخُلُوْا	بُيُوْتًا	غَيْرَ	بُيُوْتِكُمْ	حَتّٰى
ऐ लोगो जो	ईमान लाए हो	ना तुम दाख़िल हो	घरों में	सिवाए	अपने घरों के	यहां तक कि

تَسْتَاْنِسُوْا	وَتُسَلِّمُوْا	عَلٰٓى	اَهْلِهَا ط	ذٰلِكُمْ	خَيْرٌ	لَّكُمْ
तुम उन्स हासिल कर लो	और तुम सलाम करो	ऊपर	उसके रहने वालों के	ये बात	बेहतर है	तुम्हारे लिए

لَعَلَّكُمْ	تَذَكَّرُوْنَ (27)	فَاِنْ	لَّمْ	تَجِدُوْا	فِيْهَآ	اَحَدًا	فَلَا
ताकि तुम	तुम नसीहत पकड़ो	फिर अगर	ना	तुम पाओ	उनमें	किसी एक को	तो ना

تَدْخُلُوْهَا	حَتّٰى	يُؤْذَنَ	لَكُمْ ج	وَاِنْ	قِيْلَ	لَكُمُ	ارْجِعُوْا
तुम दाख़िल हो उनमें	यहां तक कि	इजाज़त दे दी जाए	तुम्हें	और अगर	कहा जाए	तुम्हें	वापस जाओ

فَارْجِعُوْا	هُوَ	اَزْكٰى	لَكُمْ ط	وَاللّٰهُ	بِمَا	تَعْمَلُوْنَ	عَلِيْمٌ (28)
तो वापस चले जाओ	वो	ज़्यादा पाकीज़ा है	तुम्हारे लिए	और अल्लाह	उसे जो	तुम अमल करते हो	ख़ूब जानने वाला है

لَيْسَ	عَلَيْكُمْ	جُنَاحٌ	اَنْ	تَدْخُلُوْا	بُيُوْتًا	غَيْرَ	مَسْكُوْنَةٍ
नहीं है	तुम पर	कोई गुनाह	कि	तुम दाख़िल हो	घरों में	ग़ैर	रिहाईशी

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

فِيْهَا	مَتَاعٌ	لَّكُمْ ؕ	وَاللّٰهُ	يَعْلَمُ	مَا	تُبْدُوْنَ	وَمَا
जिनमें	फ़ायदा है	तुम्हारे लिए	और अल्लाह	जानता है	जो कुछ	तुम ज़ाहिर करते हो	और जो कुछ

تَكْتُمُوْنَ ﴿29﴾	قُلْ	لِّلْمُؤْمِنِيْنَ	يَغُضُّوْا	مِنْ اَبْصَارِهِمْ	وَيَحْفَظُوْا
तुम छुपाते हो	कह दीजिए	मोमिन मर्दों से	वो पस्त रखें	अपनी निगाहों में से	और वो हिफ़ाज़त करें

فُرُوْجَهُمْ ؕ	ذٰلِكَ	اَزْكٰى	لَهُمْ ؕ	اِنَّ	اللّٰهَ	خَبِيْرٌۢ	بِمَا
अपनी शर्मगाहों की	ये	ज़्यादा पाकीज़ा है	उनके लिए	बेशक	अल्लाह	ख़ूब ख़बर रखने वाला है	उसकी जो

يَصْنَعُوْنَ ﴿30﴾	وَقُلْ	لِّلْمُؤْمِنٰتِ	يَغْضُضْنَ	مِنْ اَبْصَارِهِنَّ	وَيَحْفَظْنَ
वो करते हैं	और कह दीजिए	मोमिन औरतों से	वो पस्त रखें	अपनी निगाहों में से	और वो हिफ़ाज़त करें

فُرُوْجَهُنَّ	وَلَا	يُبْدِيْنَ	زِيْنَتَهُنَّ	اِلَّا	مَا	ظَهَرَ	مِنْهَا
अपनी शर्मगाहों की	और ना	वो ज़ाहिर करें	ज़ीनत अपनी	मगर	जो	ज़ाहिर हो जाए	उसमें से

وَلْيَضْرِبْنَ	بِخُمُرِهِنَّ	عَلٰى جُيُوْبِهِنَّ ۖ	وَلَا	يُبْدِيْنَ	زِيْنَتَهُنَّ
और वो ज़रूर डालें	ओढ़नियां अपनी	अपने गिरेबानों पर	और ना	वो ज़ाहिर करें	ज़ीनत अपनी

اِلَّا	لِبُعُوْلَتِهِنَّ	اَوْ	اٰبَآئِهِنَّ	اَوْ	اٰبَآءِ بُعُوْلَتِهِنَّ	اَوْ
मगर	वास्ते अपने शौहरों के	या	अपने बापों के	या	अपने शौहरों के बापों के	या

اَبْنَآئِهِنَّ	اَوْ	اَبْنَآءِ بُعُوْلَتِهِنَّ	اَوْ	اِخْوَانِهِنَّ	اَوْ	بَنِيْٓ اِخْوَانِهِنَّ
अपने बेटों के	या	अपने शौहरों के बेटों के	या	अपने भाईयों के	या	अपने भाईयों के बेटों के

اَوْ	بَنِيْٓ اَخَوٰتِهِنَّ	اَوْ	نِسَآئِهِنَّ	اَوْ	مَا	مَلَكَتْ	اَيْمَانُهُنَّ
या	अपनी बहनों के बेटों के	या	अपनी औरतों के	या	जिनके	मालिक हुए	उनके दाएं हाथ

اَوِ	التّٰبِعِيْنَ	غَيْرِ	اُولِي	الْاِرْبَةِ	مِنَ الرِّجَالِ	اَوِ	الطِّفْلِ
या	ज़ेरेदस्त	ना	रखने वाले	हाजत/ख़्वाहिश	मर्दों में से	या	लड़के

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

الَّذِيْنَ	لَمْ	يَظْهَرُوْا	عَلٰى عَوْرٰتِ	النِّسَآءِ ۖ	وَلَا	يَضْرِبْنَ
वो जो	नहीं	वो वाक़िफ़ हुए	छुपी बातों पर	औरतों की	और ना	वो मारें

بِاَرْجُلِهِنَّ	لِيُعْلَمَ	مَا	يُخْفِيْنَ	مِنْ زِيْنَتِهِنَّ ؕ	وَتُوْبُوْٓا	اِلَى اللّٰهِ
पांव अपने	कि जान लिया जाए	जो	वो छुपाती हैं	अपनी ज़ीनत में से	और तौबा करो	तरफ़ अल्लाह के

جَمِيْعًا	اَيُّهَ	الْمُؤْمِنُوْنَ	لَعَلَّكُمْ	تُفْلِحُوْنَ (31)	وَاَنْكِحُوا	الْاَيَامٰى
सब के सब	ऐ	मोमिनो	ताकि तुम	तुम फ़लाह पाओ	और निकाह कर दो	बेनिकाहों का

مِنْكُمْ	وَالصّٰلِحِيْنَ	مِنْ عِبَادِكُمْ	وَاِمَآئِكُمْ ؕ	اِنْ	يَّكُوْنُوْا	فُقَرَآءَ
तुम में से	और जो नेक हों	तुम्हारे ग़ुलामों में से	और तुम्हारी लौंडियों में से	अगर	होंगे वो	मोहताज

يُغْنِهِمُ	اللّٰهُ	مِنْ فَضْلِهٖ ؕ	وَاللّٰهُ	وَاسِعٌ	عَلِيْمٌ (32)
ग़नी कर देगा उन्हें	अल्लाह	अपने फ़ज़्ल से	और अल्लाह	ख़ूब वुसअत वाला है	ख़ूब इल्म वाला है

وَلْيَسْتَعْفِفِ	الَّذِيْنَ	لَا يَجِدُوْنَ	نِكَاحًا	حَتّٰى	يُغْنِيَهُمُ
और ज़रूर पाक दामनी इख़्तियार करें	वो जो	नहीं वो पाते (वुसअत)	निकाह की	यहां तक कि	ग़नी कर दे उन्हें

اللّٰهُ	مِنْ فَضْلِهٖ ؕ	وَالَّذِيْنَ	يَبْتَغُوْنَ	الْكِتٰبَ	مِمَّا	مَلَكَتْ
अल्लाह	अपने फ़ज़्ल से	और वो जो	चाहते हों	मुकातबत/आज़ादी की तहरीर	उनमें से जिनके	मालिक हैं

اَيْمَانُكُمْ	فَكَاتِبُوْهُمْ	اِنْ	عَلِمْتُمْ	فِيْهِمْ	خَيْرًا ۖ	وَّاٰتُوْهُمْ
दायें हाथ तुम्हारे	तो मुकातबत कर लो उनसे	अगर	जानो तुम	उनमें	कोई भलाई	और दो उन्हें

مِّنْ مَّالِ	اللّٰهِ	الَّذِيْٓ	اٰتٰىكُمْ ؕ	وَلَا	تُكْرِهُوْا	فَتَيٰتِكُمْ
माल से	अल्लाह के	वो जो	उसने दिया है तुम्हें	और ना	तुम मजबूर करो	अपनी बांदियों को

عَلَى الْبِغَآءِ	اِنْ	اَرَدْنَ	تَحَصُّنًا	لِّتَبْتَغُوْا	عَرَضَ	الْحَيٰوةِ	الدُّنْيَا ؕ
बदकारी पर	अगर	वो चाहें	पाकदामनी	ताकि तुम तलाश करो	सामान	ज़िंदगी का	दुनिया की

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَمَنْ	يُّكْرِهْهُّنَّ	فَاِنَّ	اللّٰهَ	مِنْۢ بَعْدِ	اِكْرَاهِهِنَّ	غَفُوْرٌ
और जो कोई	मजबूर करेगा उन्हें	तो बेशक	अल्लाह	बाद	उनको मजबूर करने के	बहुत बख़्शने वाला है

رَّحِيْمٌ (33)	وَلَقَدْ	اَنْزَلْنَآ	اِلَيْكُمْ	اٰيٰتٍ	مُّبَيِّنٰتٍ	وَّمَثَلًا
निहायत रहम करने वाला है	और अलबत्ता तहक़ीक़	नाज़िल कीं हमने	तरफ़ तुम्हारे	आयात	वाज़ेह	और मिसाल

ع 4 8 10

مِّنَ الَّذِيْنَ	خَلَوْا	مِنْ قَبْلِكُمْ	وَمَوْعِظَةً	لِّلْمُتَّقِيْنَ (34) ع	اَللّٰهُ	نُوْرُ
उन लोगों की जो	गुज़र चुके	तुमसे पहले	और नसीहत	मुत्तक़ी लोगों के लिए	अल्लाह	नूर है

السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضِ ؕ	مَثَلُ	نُوْرِهٖ	كَمِشْكٰوةٍ	فِيْهَا	مِصْبَاحٌ ؕ
आसमानों	और ज़मीन का	मिसाल	उसके नूर की	मानिंद ताक़ के	जिसमें	एक चिराग़ है

اَلْمِصْبَاحُ	فِيْ زُجَاجَةٍ ؕ	اَلزُّجَاجَةُ	كَاَنَّهَا	كَوْكَبٌ	دُرِّيٌّ	يُّوْقَدُ
वो चिराग़	शीशे में है	वो शीशा	गोया कि वो	तारा है	चमकता हुआ	जो रोशन किया जाता है

مِنْ شَجَرَةٍ	مُّبٰرَكَةٍ	زَيْتُوْنَةٍ	لَّا شَرْقِيَّةٍ	وَّلَا	غَرْبِيَّةٍ ۙ	يَّكَادُ
एक दरख़्त से	बाबरकत	ज़ैतून के	ना मशरिक़ी है	और ना	मग़रिबी	क़रीब है कि

زَيْتُهَا	يُضِيْٓءُ	وَلَوْ	لَمْ	تَمْسَسْهُ	نَارٌ ؕ	نُوْرٌ	عَلٰى نُوْرٍ ؕ
तेल उसका	वो रोशन हो जाए	और अगरचे	ना	छुए उसे	कोई आग	नूर है	ऊपर नूर के

يَهْدِى	اللّٰهُ	لِنُوْرِهٖ	مَنْ	يَّشَآءُ ؕ	وَيَضْرِبُ	اللّٰهُ	الْاَمْثَالَ
रहनुमाई करता है	अल्लाह	अपने नूर के लिए	जिसकी	वो चाहता है	और बयान करता है	अल्लाह	मिसालें

لِلنَّاسِ ؕ	وَاللّٰهُ	بِكُلِّ	شَيْءٍ	عَلِيْمٌ (35) ۙ	فِيْ بُيُوْتٍ	اَذِنَ	اللّٰهُ
लोगों के लिए	और अल्लाह	हर	चीज़ को	ख़ूब जानने वाला है	घरों में	हुक्म दिया	अल्लाह ने

اَنْ	تُرْفَعَ	وَيُذْكَرَ	فِيْهَا	اسْمُهٗ ۙ	يُسَبِّحُ	لَهٗ	فِيْهَا	بِالْغُدُوِّ
कि	बुलंद किया जाए	और ज़िक्र किया जाए	उनमें	नाम उसका	वो तस्बीह करते हैं	उसकी	उनमें	सुबह

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَالْاٰصَالِ ﴿36﴾	رِجَالٌ	لَّا تُلْهِيْهِمْ	تِجَارَةٌ	وَّلَا	بَيْعٌ	عَنْ ذِكْرِ
और शाम	वो मर्द	नहीं ग़ाफिल करती उन्हें	तिजारत	और ना	ख़रीदो फ़रोख़्त	ज़िक्र से

اللّٰهِ	وَاِقَامِ	الصَّلٰوةِ	وَاِيْتَآءِ	الزَّكٰوةِ	يَخَافُوْنَ	يَوْمًا
अल्लाह के	और क़ायम करने से	नमाज़ के	और अदा करने से	ज़कात के	वो डरते हैं	उस दिन से

تَتَقَلَّبُ	فِيْهِ	الْقُلُوْبُ	وَالْاَبْصَارُ ﴿37﴾	لِيَجْزِيَهُمُ	اللّٰهُ	اَحْسَنَ
उलट-पुलट हो जाऐंगे	जिसमें	दिल	और निगाहें	ताकि बदला दे उन्हें	अल्लाह	बेहतरीन

مَا	عَمِلُوْا	وَيَزِيْدَهُمْ	مِّنْ فَضْلِهٖ	وَاللّٰهُ	يَرْزُقُ	مَنْ
उसका जो	उन्होंने अमल किए	और वो ज़्यादा दे उन्हें	अपने फ़ज़्ल से	और अल्लाह	वो रिज़्क़ देता है	जिसे

يَّشَآءُ	بِغَيْرِ	حِسَابٍ ﴿38﴾	وَالَّذِيْنَ	كَفَرُوْٓا	اَعْمَالُهُمْ	كَسَرَابٍ
वो चाहता है	बग़ैर	हिसाब के	और वो जिन्होंने	कुफ़्र किया	आमाल उनके	मानिंद सराब के हैं

بِقِيْعَةٍ	يَّحْسَبُهُ	الظَّمْاٰنُ	مَآءً	حَتّٰٓى	اِذَا	جَآءَهٗ	لَمْ
चटियल मैदान में	समझता है उसे	सख़्त प्यासा	पानी	यहां तक कि	जब	वो आता है उसके पास	नहीं

يَجِدْهُ	شَيْـًٔا	وَّوَجَدَ	اللّٰهَ	عِنْدَهٗ	فَوَفّٰىهُ	حِسَابَهٗ	وَاللّٰهُ
वो पाता उसे	कुछ भी	और पाता है	अल्लाह को	अपने पास	फिर वो पूरा-पूरा देता है उसे	हिसाब उसका	और अल्लाह

سَرِيْعُ	الْحِسَابِ ﴿39﴾	اَوْ	كَظُلُمٰتٍ	فِيْ بَحْرٍ	لُّجِّيٍّ	يَّغْشٰهُ
जल्द लेने वाला है	हिसाब	या	मानिंद अंधेरों के	समुन्दर में	निहायत गहरे	ढाप लेती है उसे

مَوْجٌ	مِّنْ فَوْقِهٖ	مَوْجٌ	مِّنْ فَوْقِهٖ	سَحَابٌ	ظُلُمٰتٌۢ	بَعْضُهَا
मौज	उसके ऊपर से	एक (और) मौज	उसके ऊपर से	बादल	अंधेरे हैं	बाज़ उनके

فَوْقَ	بَعْضٍ	اِذَآ	اَخْرَجَ	يَدَهٗ	لَمْ	يَكَدْ	يَرٰىهَا	وَمَنْ
ऊपर हैं	बाज़ के	जब	वो निकाले	हाथ अपना	नहीं	वो क़रीब कि	वो देख सके उसे	और वो जो

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

ع 5 6 11

اَلَمْ	مِنْ نُّوْرٍ (40) ع	لَهٗ	فَمَا	نُوْرًا	لَهٗ	اللّٰهُ	يَجْعَلِ	لَّمْ
क्या नहीं	कोई नूर	उसके लिए	तो नहीं	कोई नूर	उसके लिए	अल्लाह ने	बनाया	नहीं

وَالْاَرْضِ	فِي السَّمٰوٰتِ	مَنْ	لَهٗ	يُسَبِّحُ	اللّٰهَ	اَنَّ	تَرَ
और ज़मीन में है	आसमानों में	जो कोई	उसके लिए	तस्बीह करता है	अल्लाह	कि बेशक	आपने देखा

وَاللّٰهُ	وَتَسْبِيْحَهٗ ؕ	صَلَاتَهٗ	عَلِمَ	قَدْ	كُلٌّ	صٰٓفّٰتٍ ؕ	وَالطَّيْرُ
और अल्लाह	और तस्बीह अपनी	नमाज़ अपनी	जान ली है	तहक़ीक़	हर एक ने	पर फैलाए	और परिंदे (भी)

وَالْاَرْضِ ۚ	السَّمٰوٰتِ	مُلْكُ	وَلِلّٰهِ	يَفْعَلُوْنَ (41)	بِمَا	عَلِيْمٌۢ
और ज़मीन की	आसमानों	बादशाहत	और अल्लाह ही के लिए है	वो कर रहे हैं	उसे जो	ख़ूब जानने वाला है

ثُمَّ	سَحَابًا	يُزْجِيْ	اللّٰهَ	اَنَّ	تَرَ	اَلَمْ	الْمَصِيْرُ (42)	وَاِلَى اللّٰهِ
फिर	बादल को	वो चलाता है	अल्लाह	कि बेशक	आपने देखा	क्या नहीं	लौटना है	और अल्लाह ही की तरफ़

يَخْرُجُ	الْوَدْقَ	فَتَرَى	رُكَامًا	يَجْعَلُهٗ	ثُمَّ	بَيْنَهٗ	يُؤَلِّفُ
निकलती है	बारिश	तो आप देखते हैं	तह-ब-तह	वो कर देता है उसे	फिर	आपस में	वो मिला देता है (उन्हें)

مِنْ بَرَدٍ	فِيْهَا	مِنْ جِبَالٍ	مِنَ السَّمَآءِ	وَيُنَزِّلُ	مِنْ خِلٰلِهٖ ۚ
कुछ ओले	उसमें	पहाड़ों से	आसमान से	और वो उतारता है	उसके दर्मियान से

يَكَادُ	يَّشَآءُ ؕ	عَنْ مَّنْ	وَيَصْرِفُهٗ	يَّشَآءُ	مَنْ	بِهٖ	فَيُصِيْبُ
क़रीब है कि	वो चाहता है	जिससे	और वो फेर देता है उसे	वो चाहता है	जिसे	उसे	फिर वो पहुंचाता है

وَالنَّهَارَ ؕ	اَلَّيْلَ	اللّٰهُ	يُقَلِّبُ	بِالْاَبْصَارِ (43) ؕ	يَذْهَبُ	بَرْقِهٖ	سَنَا
और दिन को	रात	अल्लाह	उलट-पुलट करता है	निगाहों को	वो ले जाए	उसकी बिजली की	चमक

كُلَّ	خَلَقَ	وَاللّٰهُ	لِّاُولِي الْاَبْصَارِ (44)	لَعِبْرَةً	فِيْ ذٰلِكَ	اِنَّ
हर	पैदा किया	और अल्लाह ने	अहले बसीरत के लिए	अलबत्ता इबरत है	इसमें	यक़ीनन

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

دَآبَّةٍ	مِّنْ مَّآءٍ ۚ	فَمِنْهُمْ	مَّنْ	يَّمْشِيْ	عَلٰى بَطْنِهٖ ۚ	وَمِنْهُمْ
जानदार को	पानी से	तो उनमें से कोई है	जो	चलता है	अपने पेट पर	और उनमें से कोई है

مَّنْ	يَّمْشِيْ	عَلٰى رِجْلَيْنِ ۚ	وَمِنْهُمْ	مَّنْ	يَّمْشِيْ	عَلٰٓى اَرْبَعٍ ؕ
जो	चलता है	दो पांव पर	और उनमें से कोई है	जो	चलता है	चार (पांव) पर

يَخْلُقُ	اللّٰهُ	مَا	يَشَآءُ ؕ	اِنَّ	اللّٰهَ	عَلٰى	كُلِّ	شَيْءٍ
पैदा करता है	अल्लाह	जो	वो चाहता है	बेशक	अल्लाह	ऊपर	हर	चीज़ के

قَدِيْرٌ (45)	لَقَدْ	اَنْزَلْنَآ	اٰيٰتٍ	مُّبَيِّنٰتٍ ؕ	وَاللّٰهُ	يَهْدِيْ
ख़ूब क़ुदरत रखने वाला है	अलबत्ता तहक़ीक़	नाज़िल कीं हमने	आयात	वाज़ेह	और अल्लाह	वो हिदायत देता है

مَنْ	يَّشَآءُ	اِلٰى صِرَاطٍ	مُّسْتَقِيْمٍ (46)	وَيَقُوْلُوْنَ	اٰمَنَّا	بِاللّٰهِ
जिसे	वो चाहता है	तरफ़ रास्ते	सीधे के	और वो कहते हैं	ईमान लाए हम	अल्लाह पर

وَبِالرَّسُوْلِ	وَاَطَعْنَا	ثُمَّ	يَتَوَلّٰى	فَرِيْقٌ	مِّنْهُمْ	مِّنْۢ بَعْدِ
और रसूल पर	और इताअत की हमने	फिर	मुंह फेर लेता है	एक गिरोह	उनमें से	बाद

ذٰلِكَ ؕ	وَمَآ	اُولٰٓئِكَ	بِالْمُؤْمِنِيْنَ (47)	وَاِذَا	دُعُوْٓا	اِلَى اللّٰهِ
इसके	और नहीं	ये लोग	ईमान लाने वाले	और जब	वो बुलाए जाते हैं	तरफ़ अल्लाह के

وَرَسُوْلِهٖ	لِيَحْكُمَ	بَيْنَهُمْ	اِذَا	فَرِيْقٌ	مِّنْهُمْ	مُّعْرِضُوْنَ (48)
और उसके रसूल के	ताकि वो फ़ैसला करे	दर्मियान उनके	तब	एक गिरोह (के लोग)	उनमें से	ऐराज़ करने वाले होते हैं

وَاِنْ	يَّكُنْ	لَّهُمُ	الْحَقُّ	يَاْتُوْٓا	اِلَيْهِ	مُذْعِنِيْنَ (49) ؕ	اَفِيْ قُلُوْبِهِمْ
और अगर	हो	उनके लिए	हक़	वो आते हैं	तरफ़ उसके	मुतीअ हो कर	क्या उनके दिलों में

مَّرَضٌ	اَمِ	ارْتَابُوْٓا	اَمْ	يَخَافُوْنَ	اَنْ	يَّحِيْفَ	اللّٰهُ	عَلَيْهِمْ
कोई बीमारी है	या	वो शक में पड़ गए हैं	या	वो डरते हैं	कि	ज़ुल्म करेगा	अल्लाह	उन पर

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

ع 6 10 12 الثالثة

وَ رَسُوْلُهٗ ؕ	بَلْ	اُولٰٓئِكَ	هُمُ	الظّٰلِمُوْنَ ﴿50﴾ ع	اِنَّمَا	كَانَ	قَوْلَ
और उसका रसूल	बल्कि	यही लोग हैं	वो	जो ज़ालिम हैं	बेशक	है	क़ौल

الْمُؤْمِنِيْنَ	اِذَا	دُعُوْٓا	اِلَى اللّٰهِ	وَ رَسُوْلِهٖ	لِيَحْكُمَ	بَيْنَهُمْ
मोमिनों का	जब	वो बुलाए जाते हैं	तरफ़ अल्लाह के	और उसके रसूल के	कि वो फ़ैसला करे	दर्मियान उनके

اَنْ	يَّقُوْلُوْا	سَمِعْنَا	وَ اَطَعْنَا ؕ	وَ اُولٰٓئِكَ	هُمُ	الْمُفْلِحُوْنَ ﴿51﴾
कि	वो कहते हैं	सुन लिया हमने	और इताअत की हमने	और यही लोग हैं	वो	जो फ़लाह पाने वाले हैं

وَ مَنْ	يُّطِعِ	اللّٰهَ	وَ رَسُوْلَهٗ	وَ يَخْشَ	اللّٰهَ	وَ يَتَّقْهِ
और जो कोई	इताअत करेगा	अल्लाह की	और उसके रसूल की	और वो डरेगा	अल्लाह से	और तक़वा करेगा उससे

فَاُولٰٓئِكَ	هُمُ	الْفَآئِزُوْنَ ﴿52﴾	وَ اَقْسَمُوْا	بِاللّٰهِ	جَهْدَ	اَيْمَانِهِمْ
तो यही लोग हैं	वो	जो कामयाब होने वाले हैं	और उन्होंने क़समें खाईं	अल्लाह की	पक्की/पुख़्ता	क़समें अपनी

لَئِنْ	اَمَرْتَهُمْ	لَيَخْرُجُنَّ ؕ	قُلْ	لَّا تُقْسِمُوْا ۚ	طَاعَةٌ	مَّعْرُوْفَةٌ ؕ
अलबत्ता अगर	हुक्म दिया आपने उन्हें	अलबत्ता वो ज़रूर निकलेंगे	कह दीजिए	ना तुम क़समें खाओ	इताअत तो	जानी पहचानी है

اِنَّ	اللّٰهَ	خَبِيْرٌۢ	بِمَا	تَعْمَلُوْنَ ﴿53﴾	قُلْ	اَطِيْعُوا	اللّٰهَ
बेशक	अल्लाह	ख़ूब ख़बर रखने वाला है	उसकी जो	तुम अमल करते हो	कह दीजिए	इताअत करो	अल्लाह की

وَ اَطِيْعُوا	الرَّسُوْلَ ۚ	فَاِنْ	تَوَلَّوْا	فَاِنَّمَا	عَلَيْهِ	مَا	حُمِّلَ
और इताअत करो	रसूल की	फिर अगर	तुम मुंह फेरोगे	तो बेशक	उस (रसूल) पर है	जो	बोझ वो डाला गया

وَ عَلَيْكُمْ	مَّا	حُمِّلْتُمْ ؕ	وَ اِنْ	تُطِيْعُوْهُ	تَهْتَدُوْا ؕ	وَ مَا
और तुम पर है	जो	बोझ डाले गए तुम	और अगर	तुम इताअत करोगे उसकी	तुम हिदायत पा लोगे	और नहीं है

عَلَى الرَّسُوْلِ	اِلَّا	الْبَلٰغُ	الْمُبِيْنُ ﴿54﴾	وَعَدَ	اللّٰهُ	الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا
रसूल पर	मगर	पहुंचा देना	खुल्लम-खुल्ला	वादा किया	अल्लाह ने	उन लोगों से जो	ईमान लाए

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مِنْكُمْ	وَعَمِلُوا	الصّٰلِحٰتِ	لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ	فِي الْاَرْضِ	كَمَا
तुम में से	और उन्होंने अमल किए	नेक	अलबत्ता वो ज़रूर जानशीन बनाएगा उन्हें	ज़मीन में	जैसा कि

اسْتَخْلَفَ	الَّذِيْنَ	مِنْ قَبْلِهِمْ ص	وَلَيُمَكِّنَنَّ	لَهُمْ	دِيْنَهُمُ
उसने जानशीन बनाया था	उन्हें जो	उनसे पहले थे	और अलबत्ता वो ज़रूर जमा देगा	उनके लिए	दीन उनका

الَّذِي	ارْتَضٰى	لَهُمْ	وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ	مِّنْۢ بَعْدِ	خَوْفِهِمْ
वो जो	उसने पसंद किया है	उनके लिए	और अलबत्ता वो ज़रूर बदल कर देगा उन्हें	बाद	उनके ख़ौफ़ के

اَمْنًا ط	يَعْبُدُوْنَنِيْ	لَا يُشْرِكُوْنَ	بِيْ	شَيْـًٔا ط	وَمَنْ	كَفَرَ	بَعْدَ
अमन	वो इबादत करेंगे मेरी	ना वो शरीक करेंगे	मेरे साथ	किसी चीज़ को	और जो कोई	कुफ़्र करे	बाद

ذٰلِكَ	فَاُولٰٓئِكَ	هُمُ	الْفٰسِقُوْنَ (55)	وَاَقِيْمُوا	الصَّلٰوةَ	وَاٰتُوا	الزَّكٰوةَ
इसके	तो यही लोग हैं	वो	जो फ़ासिक़ हैं	और क़ायम करो	नमाज़	और अदा करो	ज़कात

وَاَطِيْعُوا	الرَّسُوْلَ	لَعَلَّكُمْ	تُرْحَمُوْنَ (56)	لَا تَحْسَبَنَّ	الَّذِيْنَ
और इताअत करो	रसूल की	ताकि तुम	तुम रहम किए जाओ	हरगिज़ ना समझिए आप	उनको जिन्होंने

كَفَرُوْا	مُعْجِزِيْنَ	فِي الْاَرْضِ ج	وَمَاْوٰىهُمُ	النَّارُ ط	وَلَبِئْسَ
कुफ़्र किया	कि वो आजिज़ करने वाले हैं	ज़मीन में	और ठिकाना उनका	आग है	और यक़ीनन कितनी बुरी है

الْمَصِيْرُ (57) ع	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	لِيَسْتَاْذِنْكُمُ	الَّذِيْنَ	مَلَكَتْ	ع 7 7 13
लौटने की जगह	ऐ लोगो जो	ईमान लाए हो	चाहिए कि इजाज़त तलब करें तुमसे	वो लोग जिनके	मालिक हुए	

اَيْمَانُكُمْ	وَالَّذِيْنَ	لَمْ	يَبْلُغُوا	الْحُلُمَ	مِنْكُمْ	ثَلٰثَ
दाएं हाथ तुम्हारे	और वो जो	नहीं	वो पहुंचे	बुलूग़त को	तुम में से	तीन

مَرّٰتٍ ط	مِنْ قَبْلِ	صَلٰوةِ	الْفَجْرِ	وَحِيْنَ	تَضَعُوْنَ	ثِيَابَكُمْ
बार	पहले	नमाज़े	फ़ज्र से	और जिस वक़्त	तुम उतार रखते हो	कपड़े अपने

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مِّنَ الظَّهِيْرَةِ	وَمِنْۢ بَعْدِ	صَلٰوةِ	الْعِشَآءِ ۟ؕ	ثَلٰثُ	عَوْرٰتٍ
दोपहर के वक़्त	और बाद	नमाज़े	इशा के	तीन	पर्दे के (वक़्त हैं)

لَّكُمْ ؕ	لَيْسَ	عَلَيْكُمْ	وَلَا	عَلَيْهِمْ	جُنَاحٌۢ	بَعْدَهُنَّ ؕ
तुम्हारे लिए	नहीं	तुम पर	और ना	उन पर	कोई गुनाह	बाद इन (औक़ात) के

طَوّٰفُوْنَ	عَلَيْكُمْ	بَعْضُكُمْ	عَلٰى بَعْضٍ ؕ	كَذٰلِكَ	يُبَيِّنُ
बकसरत आने-जाने वाले हैं	तुम पर	बाज़ तुम्हारे	बाज़ पर	इसी तरह	वाज़ेह करता है

اللّٰهُ	لَكُمُ	الْاٰيٰتِ ؕ	وَاللّٰهُ	عَلِيْمٌ	حَكِيْمٌ (58)	وَاِذَا	بَلَغَ
अल्लाह	तुम्हारे लिए	आयात	और अल्लाह	ख़ूब इल्म वाला है	ख़ूब हिक्मत वाला है	और जब	पहुंच जाएं

الْاَطْفَالُ	مِنْكُمُ	الْحُلُمَ	فَلْيَسْتَاْذِنُوْا	كَمَا	اسْتَاْذَنَ	الَّذِيْنَ
बच्चे	तुम में से	बुलूग़त को	पस चाहिए कि वो इजाज़त लिया करें	जैसा कि	इजाज़त लेते थे	वो लोग जो

مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ	كَذٰلِكَ	يُبَيِّنُ	اللّٰهُ	لَكُمْ	اٰيٰتِهٖ ؕ	وَاللّٰهُ
इनसे पहले थे	इसी तरह	वाज़ेह करता है	अल्लाह	तुम्हारे लिए	अपनी आयात को	और अल्लाह

عَلِيْمٌ	حَكِيْمٌ (59)	وَالْقَوَاعِدُ	مِنَ النِّسَآءِ	الّٰتِيْ	لَا يَرْجُوْنَ
ख़ूब इल्म वाला है	ख़ूब हिक्मत वाला है	और बैठ रहने वालियां	औरतों में से	वो जो	नहीं वो उम्मीद रखतीं

نِكَاحًا	فَلَيْسَ	عَلَيْهِنَّ	جُنَاحٌ	اَنْ	يَّضَعْنَ	ثِيَابَهُنَّ	غَيْرَ
निकाह की	तो नहीं है	उन पर	कोई गुनाह	कि	वो उतार रखें	कपड़े (हिजाब) अपने	ना

مُتَبَرِّجٰتٍۭ	بِزِيْنَةٍ ؕ	وَاَنْ	يَّسْتَعْفِفْنَ	خَيْرٌ	لَّهُنَّ ؕ	وَاللّٰهُ
ज़ाहिर करने वालियां	ज़ीनत को	और ये कि	वो एहतियात बरतें	बेहतर है	उनके लिए	और अल्लाह

سَمِيْعٌ	عَلِيْمٌ (60)	لَيْسَ	عَلَى الْاَعْمٰى	حَرَجٌ	وَّلَا	عَلَى الْاَعْرَجِ
ख़ूब सुनने वाला है	ख़ूब जानने वाला है	नहीं है	अंधे पर	कोई हर्ज/गुनाह	और ना	लंगड़े पर

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

حَرَجٌ	وَّلَا	عَلَى الْمَرِيْضِ	حَرَجٌ	وَّلَا	عَلٰٓى اَنْفُسِكُمْ	اَنْ
कोई हर्ज/गुनाह	और ना	मरीज़ पर	कोई हर्ज/गुनाह	और ना	तुम्हारे नफ़्सों पर	कि

تَاْكُلُوْا	مِنْۢ بُيُوْتِكُمْ	اَوْ	بُيُوْتِ	اٰبَآئِكُمْ	اَوْ	بُيُوْتِ	اُمَّهٰتِكُمْ
तुम खाओ	अपने घरों से	या	घरों से	अपने बापों के	या	घरों से	अपनी मांओं के

اَوْ	بُيُوْتِ	اِخْوَانِكُمْ	اَوْ	بُيُوْتِ	اَخَوٰتِكُمْ	اَوْ	بُيُوْتِ
या	घरों से	अपने भाईयों के	या	घरों से	अपनी बहनों के	या	घरों से

اَعْمَامِكُمْ	اَوْ	بُيُوْتِ	عَمّٰتِكُمْ	اَوْ	بُيُوْتِ	اَخْوَالِكُمْ	اَوْ
अपने चचाओं के	या	घरों से	अपनी फूफियों के	या	घरों से	अपने मामूओं के	या

بُيُوْتِ	خٰلٰتِكُمْ	اَوْ	مَا	مَلَكْتُمْ	مَّفَاتِحَهٗٓ	اَوْ	صَدِيْقِكُمْ ؕ
घरों से	अपनी ख़ालाओं के	या	जो	मालिक हुए तुम	उसकी कुंजियों के	या	अपने दोस्त के

لَيْسَ	عَلَيْكُمْ	جُنَاحٌ	اَنْ	تَاْكُلُوْا	جَمِيْعًا	اَوْ	اَشْتَاتًا ؕ	فَاِذَا
नहीं	तुम पर	कोई गुनाह	कि	तुम खाओ	मिल कर	या	अलग-अलग	फिर जब

دَخَلْتُمْ	بُيُوْتًا	فَسَلِّمُوْا	عَلٰٓى اَنْفُسِكُمْ	تَحِيَّةً	مِّنْ عِنْدِ	اللّٰهِ
दाख़िल हो तुम	घरों में	तो सलाम करो	अपने लोगों पर	तोहफ़ा (दुआ) है	पास से	अल्लाह के

مُبٰرَكَةً	طَيِّبَةً ؕ	كَذٰلِكَ	يُبَيِّنُ	اللّٰهُ	لَكُمُ	الْاٰيٰتِ	لَعَلَّكُمْ
बाबरकत	पाकीज़ा	इसी तरह	वाज़ेह करता है	अल्लाह	तुम्हारे लिए	आयात को	ताकि तुम

تَعْقِلُوْنَ (61) ع	اِنَّمَا	الْمُؤْمِنُوْنَ	الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	بِاللّٰهِ	وَرَسُوْلِهٖ	ع 8 4 14
तुम अक़्ल से काम लो	बेशक	मोमिन तो	वो हैं जो	ईमान लाए	अल्लाह पर	और उसके रसूल पर	

وَاِذَا	كَانُوْا	مَعَهٗ	عَلٰٓى اَمْرٍ	جَامِعٍ	لَّمْ	يَذْهَبُوْا	حَتّٰى
और जब	वो होते हैं	आपके साथ	किसी काम पर	इज्तिमाई	नहीं	वो जाते	यहां तक कि

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

يَسْتَاْذِنُوْهُ ؕ	اِنَّ	الَّذِيْنَ	يَسْتَاْذِنُوْنَكَ	اُولٰٓئِكَ	الَّذِيْنَ
वो इजाज़त ले लें उन से	बेशक	वो लोग जो	इजाज़त मांगते हैं आपसे	यही वो लोग हैं	जो

يُؤْمِنُوْنَ	بِاللّٰهِ	وَ رَسُوْلِهٖ ۚ	فَاِذَا	اسْتَاْذَنُوْكَ	لِبَعْضِ شَاْنِهِمْ
ईमान लाए हैं	अल्लाह पर	और उसके रसूल पर	फिर जब	वो इजाज़त मांगें आपसे	अपने किसी काम के लिए

فَاْذَنْ	لِّمَنْ	شِئْتَ	مِنْهُمْ	وَاسْتَغْفِرْ	لَهُمُ	اللّٰهَ ؕ	اِنَّ
तो इजाज़त दे दीजिए	जिसके लिए	आप चाहें	उनमें से	और बख़्शिश मांगिए	उनके लिए	अल्लाह से	बेशक

اللّٰهَ	غَفُوْرٌ	رَّحِيْمٌ (62)	لَا تَجْعَلُوْا	دُعَآءَ	الرَّسُوْلِ	بَيْنَكُمْ
अल्लाह	बहुत बख़्शने वाला है	निहायत रहम करने वाला है	ना तुम बना लो	बुलाना	रसूल का	आपस में

كَدُعَآءِ	بَعْضِكُمْ	بَعْضًا ؕ	قَدْ	يَعْلَمُ	اللّٰهُ	الَّذِيْنَ	يَتَسَلَّلُوْنَ
मानिंद बुलाने के	तुम्हारे बाज़ के	बाज़ को	तहक़ीक़	जानता है	अल्लाह	उनको जो	खिसक जाते हैं

مِنْكُمْ	لِوَاذًا ۚ	فَلْيَحْذَرِ	الَّذِيْنَ	يُخَالِفُوْنَ	عَنْ اَمْرِهٖٓ	اَنْ
तुम में से	आड़ लेते हुए	पस चाहिए कि डरें	वो लोग जो	मुख़ालिफ़त करते हैं	उसके हुक्म की	कि

تُصِيْبَهُمْ	فِتْنَةٌ	اَوْ	يُصِيْبَهُمْ	عَذَابٌ	اَلِيْمٌ (63)	اَلَآ	اِنَّ
पहुंचे उन्हें	कोई आज़माइश	या	पहुंचे उन्हें	अज़ाब	दर्दनाक	ख़बरदार	बेशक

لِلّٰهِ	مَا	فِي السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضِ ؕ	قَدْ	يَعْلَمُ	مَآ	اَنْتُمْ
अल्लाह ही के लिए है	जो	आसमानों में	और ज़मीन में है	तहक़ीक़	वो जानता है	वो जो हो	तुम

عَلَيْهِ ؕ	وَيَوْمَ	يُرْجَعُوْنَ	اِلَيْهِ	فَيُنَبِّئُهُمْ	بِمَا
जिस पर	और जिस दिन	वो लौटाए जाऐंगे	तरफ़ उसके	तो फिर वो बता देगा उन्हें	वो जो

عَمِلُوْا ؕ	وَاللّٰهُ	بِكُلِّ	شَيْءٍ	عَلِيْمٌ (64) ع
उन्होंने अमल किए	और अल्लाह	हर	चीज़ को	ख़ूब जानने वाला है

ع 9 3 15

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اٰيَاتُهَا: 77 | 25 سُوْرَةُ الْفُرْقَانِ مَكِّيَّةٌ 42 | رُكُوْعَاتُهَا: 6

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

تَبٰرَكَ	الَّذِىْ	نَزَّلَ	الْفُرْقَانَ	عَلٰى عَبْدِهٖ	لِيَكُوْنَ	لِلْعٰلَمِيْنَ
बहुत बाबरकत है	वो जिसने	नाज़िल किया	फ़ुरक़ान	अपने बंदे पर	ताकि वो हो जाए	तमाम जहान वालों के लिए

نَذِيْرًا ۙ (1)	الَّذِىْ	لَهٗ	مُلْكُ	السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضِ	وَلَمْ	يَتَّخِذْ
डराने वाला	वो जो	उसी के लिए है	बादशाहत	आसमानों	और ज़मीन की	और नहीं	उसने बनाई

وَلَدًا	وَّلَمْ	يَكُنْ	لَّهٗ	شَرِيْكٌ	فِى الْمُلْكِ	وَخَلَقَ	كُلَّ
कोई औलाद	और नहीं	है	उसके लिए	कोई शरीक	बादशाहत में	और उसने पैदा किया	हर

شَىْءٍ	فَقَدَّرَهٗ	تَقْدِيْرًا (2)	وَاتَّخَذُوْا	مِنْ دُوْنِهٖٓ	اٰلِهَةً
चीज़ को	पस उसने अंदाज़ा किया उसका	अंदाज़ा करना	और उन्होंने बना लिए	उसके सिवा	कुछ इलाह

لَّا يَخْلُقُوْنَ	شَيْـًٔا	وَّهُمْ	يُخْلَقُوْنَ	وَلَا	يَمْلِكُوْنَ	لِاَنْفُسِهِمْ
नहीं वो पैदा करते	कोई चीज़	और वो	वो पैदा किए जाते हैं	और नहीं	वो इख़्तियार रखते	अपने नफ़्सों के लिए

ضَرًّا	وَّلَا	نَفْعًا	وَّلَا	يَمْلِكُوْنَ	مَوْتًا	وَّلَا	حَيٰوةً	وَّلَا
किसी नुक़्सान का	और ना	किसी नफ़ा का	और नहीं	वो इख़्तियार रखते	मौत का	और ना	ज़िंदगी का	और ना

نُشُوْرًا (3)	وَقَالَ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْٓا	اِنْ	هٰذَآ	اِلَّآ	اِفْكٌ
दोबारा जी उठने का	और कहा	उन लोगों ने जिन्होंने	कुफ़्र किया	नहीं	ये (क़ुरआन)	मगर	एक झूठ

افْتَرٰىهُ	وَاَعَانَهٗ	عَلَيْهِ	قَوْمٌ اٰخَرُوْنَ ۚ	فَقَدْ	جَآءُوْ	ظُلْمًا
उसने गढ़ लिया इसे	और मदद की उसकी	इस पर	एक दूसरी क़ौम ने	पस तहक़ीक़	वो लाए	ज़ुल्म

وَّزُوْرًا ۚ (4)	وَقَالُوْٓا	اَسَاطِيْرُ	الْاَوَّلِيْنَ	اكْتَتَبَهَا	فَهِىَ	تُمْلٰى
और झूठ	और उन्होंने कहा	कहानियां हैं	पहलों की	उसने लिखवा लिया है उन्हें	तो वो	वो इमला की जाती हैं

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

عَلَيْهِ	بُكْرَةً	وَّاَصِيْلًا ⑤	قُلْ	اَنْزَلَهُ	الَّذِيْ	يَعْلَمُ	السِّرَّ
उस पर	सुबह	और शाम	कह दीजिए	नाज़िल किया है उसे	उसने जो	जानता है	छुपी बात को

فِي السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضِ ؕ	اِنَّهٗ	كَانَ	غَفُوْرًا	رَّحِيْمًا ⑥	وَقَالُوْا
आसमानों में	और ज़मीन में	बेशक वो	है वो	बहुत बख़्शने वाला	निहायत रहम करने वाला	और उन्होंने कहा

مَالِ	هٰذَا	الرَّسُوْلِ	يَاْكُلُ	الطَّعَامَ	وَيَمْشِيْ	فِي الْاَسْوَاقِ ؕ
क्या है	इस	रसूल को	कि वो खाता है	खाना	और वो चलता है	बाज़ारों में

لَوْلَآ	اُنْزِلَ	اِلَيْهِ	مَلَكٌ	فَيَكُوْنَ	مَعَهٗ	نَذِيْرًا ⑦ لا	اَوْ
क्यों नहीं	उतारा गया	इस पर	कोई फ़रिश्ता	तो वो होता	साथ इसके	डराने वाला	या

يُلْقٰٓى	اِلَيْهِ	كَنْزٌ	اَوْ	تَكُوْنُ	لَهٗ	جَنَّةٌ	يَّاْكُلُ	مِنْهَا ؕ
डाला जाता	तरफ़ उसके	कोई ख़ज़ाना	या	होता	उसके लिए	कोई बाग़	वो खाता	उसमें से

وَقَالَ	الظّٰلِمُوْنَ	اِنْ	تَتَّبِعُوْنَ	اِلَّا	رَجُلًا	مَّسْحُوْرًا ⑧	اُنْظُرْ
और कहा	ज़ालिमों ने	नहीं	तुम पैरवी करते	मगर	एक मर्द की	जो सहरज़दा है	देखो

كَيْفَ	ضَرَبُوْا	لَكَ	الْاَمْثَالَ	فَضَلُّوْا	فَلَا	يَسْتَطِيْعُوْنَ
किस तरह	उन्होंने बयान कीं	आपके लिए	मिसालें	तो वो भटक गए	पस नहीं	वो इस्तिताअत रखते

ع 1 9 16

سَبِيْلًا ⑨ ع	تَبٰرَكَ	الَّذِيْٓ	اِنْ	شَآءَ	جَعَلَ	لَكَ	خَيْرًا
रास्ते की	बहुत बाबरकत है	वो जो	अगर	वो चाहे	वो बना दे	आपके लिए	बेहतर

مِّنْ ذٰلِكَ	جَنّٰتٍ	تَجْرِيْ	مِنْ تَحْتِهَا	الْاَنْهٰرُ لا	وَيَجْعَلْ	لَّكَ
इससे	बाग़ात	बहती हों	उनके नीचे से	नहरें	और वो बना दे	आपके लिए

قُصُوْرًا ⑩	بَلْ	كَذَّبُوْا	بِالسَّاعَةِ قف	وَاَعْتَدْنَا	لِمَنْ	كَذَّبَ
महल्लात	बल्कि	उन्होंने झुठलाया	घड़ी/क़यामत को	और तैयार कर रखी है हमने	उसके लिए जो	झुठलाए

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

بِالسَّاعَةِ	سَعِيْرًا ⑪ ج	اِذَا	رَاَتْهُمْ	مِّنْ مَّكَانٍۭ	بَعِيْدٍ	سَمِعُوْا
घड़ी को/क़यामत को	भड़कती आग	जब	वो देखेगी उन्हें	जगह से	दूर की	वो सुनेंगे

لَهَا	تَغَيُّظًا	وَّزَفِيْرًا ⑫	وَاِذَآ	اُلْقُوْا	مِنْهَا	مَكَانًا	ضَيِّقًا
उसकी	सख़्त ग़ुस्से की आवाज़	और चीख़ना चिल्लाना	और जब	वो डाले जाएंगे	उसमें	किसी जगह पर	तंग

مُّقَرَّنِيْنَ	دَعَوْا	هُنَالِكَ	ثُبُوْرًا ⑬ ط	لَا تَدْعُوا	الْيَوْمَ	ثُبُوْرًا
जकड़े हुए	वो पुकारेंगे	उस जगह	हलाकत को	ना तुम पुकारो	आज	हलाकत

وَّاحِدًا	وَّادْعُوْا	ثُبُوْرًا	كَثِيْرًا ⑭	قُلْ	اَذٰلِكَ	خَيْرٌ	اَمْ	جَنَّةُ
एक ही	बल्कि पुकारो	हलाकतें	बहुत सी	कह दीजिए	क्या ये	बेहतर है	या	जन्नत

الْخُلْدِ	الَّتِيْ	وُعِدَ	الْمُتَّقُوْنَ ط	كَانَتْ	لَهُمْ	جَزَآءً
हमेशगी की	वो जो	वादा किए गए	मुत्तक़ी लोग	है	उनके लिए	बदला

وَّمَصِيْرًا ⑮	لَهُمْ	فِيْهَا	مَا	يَشَآءُوْنَ	خٰلِدِيْنَ ط	كَانَ
और लौटने की जगह	उनके लिए है	उसमें	जो	वो चाहेंगे	हमेशा रहने वाले हैं	है

عَلٰى رَبِّكَ	وَعْدًا	مَّسْـُٔوْلًا ⑯	وَيَوْمَ	يَحْشُرُهُمْ	وَمَا	يَعْبُدُوْنَ
आपके रब पर	एक वादा	पूछा जाने वाला	और जिस दिन	वो इकट्ठा करेगा उन्हें	और जिनकी	वो इबादत करते हैं

مِنْ دُوْنِ	اللّٰهِ	فَيَقُوْلُ	ءَاَنْتُمْ	اَضْلَلْتُمْ	عِبَادِيْ	هٰٓؤُلَآءِ
सिवाए	अल्लाह के	तो वो फ़रमाएगा	क्या तुमने	गुमराह किया तुमने	मेरे बंदों को	इन सबको

اَمْ	هُمْ	ضَلُّوا	السَّبِيْلَ ⑰ ط	قَالُوْا	سُبْحٰنَكَ	مَا	كَانَ	يَنْۢبَغِيْ
या	वो (ख़ुद)	भटक गए थे	रास्ते से	वो कहेंगे	पाक है तू	नहीं	था	जायज़

لَنَآ	اَنْ	نَّتَّخِذَ	مِنْ دُوْنِكَ	مِنْ اَوْلِيَآءَ	وَلٰكِنْ	مَّتَّعْتَهُمْ
हमारे लिए	कि	हम बनाते	तेरे सिवा	कोई दोस्त	और लेकिन	तू ने सामाने ज़िंदगी दिया उन्हें

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَاٰبَآءَهُمْ	حَتّٰى	نَسُوا	الذِّكْرَ ج	وَكَانُوْا	قَوْمًا	بُوْرًا ⑱
और उनके आबा ओ अजदाद को	यहां तक कि	वो भूल गए	नसीहत	और थे वो	लोग	हलाक होने वाले

فَقَدْ	كَذَّبُوْكُمْ	بِمَا	تَقُوْلُوْنَ لا	فَمَا	تَسْتَطِيْعُوْنَ	صَرْفًا
पस तहक़ीक़	उन्होंने झुठलाया तुम्हें	बवजह उसके जो	तुम कहते थे	तो नहीं	तुम इस्तिताअत रखते	फेरने की (अज़ाब को)

وَّلَا	نَصْرًا ج	وَمَنْ	يَّظْلِمْ	مِّنْكُمْ	نُذِقْهُ	عَذَابًا	كَبِيْرًا ⑲
और ना	मदद की	और जो कोई	ज़ुल्म करेगा	तुम में से	हम चखाऐंगे उसे	अज़ाब	बहुत बड़ा

وَمَآ	اَرْسَلْنَا	قَبْلَكَ	مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ	اِلَّآ	اِنَّهُمْ	لَيَاْكُلُوْنَ
और नहीं	भेजा हमने	आपसे पहले	रसूलों में से	मगर	बेशक वो	अलबत्ता खाते थे

الطَّعَامَ	وَيَمْشُوْنَ	فِي الْاَسْوَاقِ ط	وَجَعَلْنَا	بَعْضَكُمْ
खाना	और वो चलते थे	बाज़ारों में	और बनाया हमने	तुम्हारे बाज़ को

لِبَعْضٍ	فِتْنَةً ط	اَتَصْبِرُوْنَ ج	وَكَانَ	رَبُّكَ	بَصِيْرًا ⑳ ع
बाज़ के लिए	आज़माइश	क्या तुम सब्र करोगे	और है	रब आपका	ख़ूब देखने वाला

ع 2 11 17

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION